अपनी बात

यह एक निर्विवाद सत्य है कि मानव जीवन मे चिकित्सा विज्ञान एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मानव के स्वास्थ्य व शक्ति की सुरक्षा उसके उतम आचरण, खान–पान पर ही प्रकृति के नियमानुसार निर्भर करती है। अगर प्रकृति के नियम विरुद्ध कोई छोटी-सी भूलकर बैठते हैं तो यह भयकर कष्ट मे डाल देती है। वनस्पति पौधो के जीवन एव निर्वलीकृत खनिजो से निर्मित जडी-बूटी खनिज सम्बन्धी मिश्रण मानव को दैनदिन की व्याधियो से मुक्त करते है। तथा मानव के आतरिक शक्ति के निर्माण मे सहायता प्रदान करते है।

आपके हाथों में यह छोटी-सी पुस्तक देते हुए प्रसन्नता हो रही है, इस पुस्तिका के माध्यम से हम हमारे द्वारा निर्मित पेटेन्ट आशुफलदायक एव प्रभावित औषधियो के बारे मे अल्प विचार प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

विभिन्न जडी–बूटिया खनिजो की आणविक सिद्धात के अनुसार सूक्ष्मतम कणो के रुप मे पेटेन्ट दवाएं हमारे द्वारा निर्मित की गई है। सदैव विश्वास-पात्र और उत्कृष्ट परिणामकारी ऐसी विशुद्ध औषधिया और व्यवहारो मे सम्पूर्ण प्रामाणिकता है। क्योकि जडी-बून्टियो की बारीकी से जाच-पडताल की जाती है उत्पादन की अवस्था मे 'क्वालिटी कन्ट्रोल' का विशेष ध्यान रखा जाता है। हमारी अनुसन्धान शाला मे प्रत्येक क्षण नये-नये अन्वेषण के साथ आयुवेद के सिद्धातो का विशेष ध्यान रखा जाता है।

हम उन ऋषि-मुनियो के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते है जिन्होने तनाव पूर्ण, रोग-ग्रस्त एव उदासीन युग मे हमे विभिन्न जडी-बून्टियो द्वारा मानव जाति की सेवा करने के लिए अपना उतराधिकारी बनाया। साथ ही उन चिकित्सको के भी ऋणी है जिन्होने समय-समय पर हमे मार्ग दर्शन दिया। हम आशा रखने हैं कि भविष्य मे भी अपने अमूल्य सुझाव अनुभव एव विचारो से अवगत करवाते रहेगे एव सहयोग प्रदान करेगे।

श्री त्रिमूर्ति फार्मेसी
बीकानेर

त्रिमूर्ति अग्निसंदीपन चुर्ण
AGNISANDIPAN CHURAN
दीपन, पाचन व क्षुधा प्रदीपक

घटक :

जीरा सफेद, जीरा स्याह, धनिया, दाल चीनी, सौंठ, हींग, काली-मिर्च, मकोय, नीम्बू सत्व, सैंधा नमक, शक्कर।

जीरा सफेद (Cuminum Cyminum) : यह अरुचि, वमन, अग्नि-माद्य, अजीर्ण, पेट का दर्द, सग्रहणी, रक्तविकार, कफवातशामक, दीपन व पाचक है।

जीरा स्याह (Cerum Carwi) · यह उदर कृमिनाशक, अरुचि, वमन, पेट दर्द, अजार्ण, अग्निमाद्य, सग्रहणीनाशक, दीपन व पाचक है।

धनिया (Coriandrum Sativum) · यह त्रिदोष हर है। कफ को बाहर निकालता है। मस्तिष्क के लिए बलकारक है। मूत्रल, दीपन, पाचक व भूख को बढाता है।

दालचीनी (Cinnamomum Zeylanicum) : यह पाचन सबधी तकलीफो को दूर कर, मुखशोष, उदरशूल कृमि को हटाती है यह रक्त मे श्वेत कणो की वृद्धि करती है।

सौंठ (Zingiber Offieinale) यह आमवातनाशक, वीर्य वर्धक, अफारा, कफ, उदरशूल, खासी को दूर करती है।

हींग (Ferula Assafoetida) यह कफ वातनाशक, उदरशूल, अफारा, जी मचलाना, कब्जिनाशक, कृमि, गुल्मनाशक एव पाचक है।

कालीमिर्च (Piper Nigrum) यह कफवातनाशक, दीपन, पाचन, मूत्रल, अग्निमाद्य, प्रमेह, श्वास-कास व उदरशूल को दूर करती है।

मकोय (Solanum Nigrum) यह आमाशय की सूजन को दूर करता है। मूत्रल सग्राही है।

नीबूसत्व (Citrc Acid) यह रक्त शोधक है। दीपन, पाचन पित्तशामक मे उपयोगी है।

पीपल (Pepper Long) · यह रक्तवर्धक है। पाचक, अग्निबर्धक और प्लीहा वृद्धि को रोकती है। उदरशूल एव पित्तशामक है।

सैंधा नमक (Sodium Chloride) · यह पाचक, पित्त एव कफ प्रतिकार में उपयोगी।

उपयोग :

मन्दाग्नि, पेट की सूजन, हृदय-वेदना, रक्तहीनता, भोजन का न पचना, अफारा, पेट दर्द, अग्निवर्धक है। लम्बी बीमारी के पश्चात धीरे-धीरे पुन: स्वस्थ होने एवं वायु की गति को नियमित करने मे वहुत उपयोगी है। इसके सेवन से भूख वढती है। जी मचलाना, उबाक एवं कब्ज आदि विकारो मे लाभप्रद है।

सेवन विधि :

3 से 6 ग्राम तक जल के साथ दिन मे 2–3 बार या चिकित्सक की की सलाहनुसार।

पैकिग · 50, 100, 200 एव 400 ग्राम मे।

त्रिमूर्ति **अमृत रसायन**

AMRIT RASAYAN

कैलशियम व विटामिन 'सी' से भरपूर

घटक :

आवला, इलायची बीज, पुष्प गुलाव, पीपल, वशलोचन, मुक्ताशुक्ति पिष्टी, प्रवाल पिष्टी।

गुण धर्म :

आवला (Emblica Officinalis) : इसमे गैलिक एसिड व इलेगिग एसिड पाया जाता है। पेक्टिज व विटामिन 'सी प्रचुर मात्रा मे होता है। यह वाजीकरण रसायन है दीपन, पाचन, पितशामक, पौष्टिक, कब्जनाशक, स्वप्नदोप, शुक्रप्रमेह, आयुबलवर्द्धक, रक्त की कमी, ववासीर, नेत्र रोग, रक्तप्रदर, खुजली, खांसी आदि मे उपयोगी है।

इलायची वीज (Cardamomi Fructus) : यह वात-कफ, रक्तपित्त, वमन, श्वास-कास, खुजली, मूत्र-कृच्छ, तृष्णानाशक, दुर्गन्धनाशक है।

पुष्प गुलाब (Rosa Alba) : यह हृदय रोग, मस्तिष्क दौर्बल्य, रक्त विकारो को दूर करता है। धातुवर्द्धक एव बाजीकरण है। दीपन, पाचक, रोचक एव मधुर है।

पीपल (Pepper Long) : यह रक्तवर्धक है। पाचक, अग्निवर्द्धक और प्लीहा वृद्धि को रोकती है। श्वास-कास मे उपयोगी है।

वशलोचन (Bambusa Arundımacea) : यह वात-पितशामक, कफ को निकालने वाला, मूत्रल, श्वास-कास मे उपयोगी होता है।

मुक्ता शुक्ति पिष्टी (Mukta sukti pıstı) : क्षय, श्वास-कास, जीर्ण ज्वर, हृदय रोग, पितज, दाह, अरुचि, वमन, श्वेत/रक्त प्रदर, अम्लपित आदि मे लाभप्रद है।

प्रवाल पिष्टी (Prawal Pıshti) : क्षय, पित्त-विकार, रक्त–पित, श्वास–कास, धातु रोग, रक्तार्श, यकृत-विकार, अम्ल-पित, रक्त प्रदर, वमन मे उपयोगी होती है।

उपयोग :

यह प्राकृतिक विटामिन 'सी' एव कैलशियम से भरपूर होता हैं। समुचित पाचन–क्रिया सुनिश्चित करता है। क्षय रोगी के लिए अत्युतम रसायन है। अरुचि, वमन, दाह, अम्लपित, चितभ्रम, घबराहट मे लाभप्रद है। यह खारिश व रक्तदोष मे भी उपयोगी है। यह रसायन गर्भपात को रोकता है रक्तार्श एव रक्तप्रदर मे भी उपयोगी है। इसका सेवन सभी आयु वर्ग के लिए उपयोगी है।

सेवन विधि :

5 से 10 ग्राम तक दिन मे दो बार गर्भावस्था मे दूध के साथ अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिग : 200 व 400 ग्राम पैक मे।

●●

त्रिमूर्ति बालामृत
BALAMRIT
बच्चों के लिए सुमधुर टॉनिक

घटक :

गुलाब पत्रक, अजवायन, निलोफर, बंशलोचन, अमलतास, शख-पुष्पी, मंजीठ, सौफ, टकरण भस्म, शक्कर।

गुण–धर्म :

गुलाब पत्रक (Rosa Alba) यह शरीर की सूजन कम करके उत्त-पांगी को बल प्रदान करता है एव पित्त की तीक्ष्णता शान्त करता है। दाह-प्रशामन ज्वरघ्न एव कब्जनाशक है।

अजवायन (Trachyspermum Ammı) यह दीपन, पाचक वातानुलोमन, शूल प्रशमन, जीवाणु नाशक, उदर कृमिनाशक है।

निलोफर (Nelumbıum Specıosum) यह कफ–पित्त शामक, दाह प्रशमन, छर्दि एव तृष्णा निग्रहण, विरेचनीय, त्वगदोपहर ज्वरघ्न बल्य है।

बंशलोचन (Bambusa Arundınacea) . यह वात–पितशामक, तृष्णा निग्रह, ग्राही, कफनिस्सारक, श्वासहर, मूत्रल, ज्वरघ्न बल्य एव शीतल होता है।

अमलतास (Cassıae Frutus) . यह मृदुरेचन एव कुष्ठघ्न है।

शख पुष्पी (Convolvulus Plurıcaulls) यह त्रिदोपहर, मस्तिष्क शामक एव नाडी बल्य, दीपन, पाचन, रक्तस्तम्भक, कफ को निकालने वाला मूत्र–विरेचक एव दाह प्रशमन मे उपयोगी होती है।

सौफ (Pımpınella Anısum) · यह मधुर, वात-पित्तशामक मूत्र-विरेचक, उदरशूल, ज्वर, दाह, क्षय, कफ रोग, नेत्र रोग, रक्त रोग, वमन, अतिसार मे उपयोगी होता है।

मजीठ (Rubıa Cardıfolıa) यह पाचक एव रक्त-शोधक है।

टकरण भस्म (Tankan Bhasma) यह रक्तशोधक, खासी, राज्यक्षमा, निमोनिया, वमन, मूत्रकृच्छ, प्रमेह आदि मे उपयोगी होती है।

उपयोग :

बालामृत बच्चो के अतिसार, उदरशूल में लाभप्रद है। यह पेट के फुलने को कम करता है। दातो को आसानी से निकालते हुए उस समय होने वाली समस्त तकलीफो को शात करता है। बच्चो की कमजोरी, वृद्धि न होना, सूखा, भूख कम लगना, खून का न बनना, सुस्तीपन को दूर कर बच्चो को बलवान बनाता है।

सेवन विधि :

नवजात शिशु को 5–5 बून्द सुबह-शाम 6 माह से एक वर्ष के बच्चे को 2 से 3 एम. एल. दिन मे 2 बार जल या फलों के रस से अथवा चिकित्सक की सलाहानुसार।

पैकिग : 100 एम. एल. बोतल पैक मे।

●●

त्रिमूर्ति चर्मिना मल्हम
CHARMINA OINTMENT
[केवल वाहरी प्रयोग के लिए]

घटक :

पुष्पाजन, नीम की पत्ती, नीलगिरी तेल, सिन्दूर, वैसलीन।

गुण धर्म :

पुष्पाजन (Zinc Oxide) यह घाव नाशक, आतरिक रक्तस्राव, दर्दनाशक एव आरोग्यकर है।

नीम की पत्ती (Neen Leaf) : यह कृमि को निकालने वाला है। यह कुष्ठग्रस्त त्वचा पर विशेष कार्य करता है। यह घावनाशक एव ग्रथियों सूजन मे उपयोगी है। इसमे घाव भरने वाला तत्व है।

नीलगिरी तेल (Nilgir Oil) : यह दर्द निवारक, जलन शान्त करने वाला एव सूजन मे उपयोगी है।

सिन्दूर (Sindur) : घावनाशक, पीडा हरन मे प्रयोग किया जाता है।

उपयोग :

स्रावयुक्त पामा, विचर्चिका, क्षत, विस्फोटक, एलर्जिक घाव एव त्वचा रोगो मे लाभप्रद ।

प्रयोग विधि :

दर्द वाले भाग, घाव साफ करके दिन मे दो या तीन बार लगावे या इसकी पट्टी बाध ले अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार ।

पैकिग . 15 ग्राम (ट्यूब) ।

त्रिमूर्ति क्षुधावर्धक चुर्ण

CHUDAVARDHAK CHURAN

स्वादिष्ट एवं रूचिकर

घटक :

जीरा सफेद, कालीमिर्च, अजवायन, बसलोचन, हीग, नमक काला, नमक सांभर, नीम्बूसत्व, पीपल, सू ठ, तेजपात, अनारदाना, पीपलामूल, बडी इलायची बीज, दालचीनी, शक्कर,

गुण-धर्म :

सफेद जीरा (Cuminum Cyminum) यह अग्निमाद्य, अजीर्ण, पेट का दर्द, सग्रहणी, रक्तविकार, कफ-वातशामक, दीपन व पाचक है ।

काली मिर्च (Piper nigrum) यह कफ वातशामक, दीपन,पाचक मूत्रल, अग्निमाद्य, अजीर्ण, प्रमेह, श्वास-कास व उदरशूल को दूर करती है ।

अजवायन (Trachyspermum ammi) : यह दीपन, पाचक, वातानुलोमन, पेट के दर्द को ठीक करती है । उदर के कृमि व जीवाणु का नाश करती है ।

वशलोचन (Bambusa Arundinacea) यह वात–पित्तशामक, कफ को निकालने वाला, मूत्रल, श्वास-कास मे उपयोगी-होता है ।

हीग (Ferula assafoetida) यह कफ वातनाशक, उदरशूल, अफारा, जी मचलाना, कब्जिनाशक, कृमि, गुल्मनाशक एव पाचक है ।

काला नमक (Black Salt) यह भूख को बढाता है। जी मचलाना डकार आदि में लाभप्रद है।

साभर नमक 'Sodium Cloride) : यह शामक, पाचक, व भूख बढाने मे सहयोगी है।

नीबू सत्व [Citric acid] यह रक्त शोधक है दीपन, पाचन, पित्तशामक है।

पीपल [Pepper Long] : यह रक्त को बढाती है। प्लीहा वृद्धि को रोकती है। पाचक, अग्निवर्द्धक एव श्वास-कास मे उपयोगी है।

सूठ Zingiber [Officinale] : यह वात–नाशक, वीर्यवर्धक, कफ अफारा, पेट का दर्द एव खासी को दूर करती है।

तेजपत्र [Cinnamomum Tamale] : यह दीपन, पाचन, वातानुलोमन, जी मचलाना, मुख की दुर्गन्ध को दूर करने मे सहायक है।

अनारदाना [Punica Granatun] : यह वात कफनाशक, कफ को निकालने मे सहायक, दीपन व पाचन क्रिया को ठीक करता है।

पीपलामूल [Pipper Mool] यह श्वास कास को दूर करती है। पेट दर्द ठीक करती है। पित्तशामक है।

बडी इलायची बीज [Amomum Suleulatum] : यह रोचक, जी मचलाना, उल्टी, श्वास कास मे उपयोगी है।

दालचीनी [Cinnamoum Zeylanicmum] : यह पाचन सम्बन्धि तकलीफो को दूर कर मुख शोप, उदरशूल, कृमि को हटाती है साथ ही रक्त मे श्वेत–कणो की वृद्धि करती हैं।

उपयोग :

अजीर्ण, अफारा, हिचकी, वमन, अरुचि, मन्दाग्नि आदि को नष्ट कर भूख को बढाता है। श्वास–कास मे भी यह उपयोगी है। इस चूर्ण में दीपन, पाचक और वातघ्न गुण है।

सेवन विधि :

3 से 6 ग्राम तक जल के साथ दिन मे 2-3 बार या चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिग 50, 100, एवं 200 ग्राम पैक मे।

त्रिमूर्ति ग्राइप वाटर
GRIPE WATER
बच्चों का मधुर पेय

घटक :

अजवायन, सौफ, गाजवान, निलोफर, मुलेठी, खाकसी, कर्पूर लाइम वाटर चीनी।

गुण धर्म

अजवायन (Trachyspermum ammi) . पेट का दर्द, दीपन, पाचन, पेट के कीडो को खत्म करने मे सहायक।

सौफ (Pimpinella Anisum) · यह मधुर, वात–पित्तशामक, मूत्र विरेचक, पेट का दर्द, क्षय, कफ–रोग, वमन, अतिसार मे उपयोगी है।

गाजबान (Caccinia glauca savi) . यह वात–पितशामक, कफ नि·सारक, रक्तशोधक, पेट पर अफारा, खासी, गले की खराश आदि मे उपयोगी है।

निलोफर (Nelumbo nucifora) · यह कफ–पितशामक, दाह–प्रशमन, प्यास को बुझाने मे सहयोगी, मूत्र को साफ लाता है। शरीर को बलवान बनाता है।

मुलेठी (Glycyrrbizae radix) यह वात पित्तशामक, मूत्रल, कफ को निकालने वाली, रोगनाशक, शुक्रवर्धक रसायन है।

खाकसी (Sisymibrium Lrio) . यह कफ निस्सारक, ज्वरघ्न, पुष्टिकर, दाहशामक एव मसूरिका व विसूचिका मे उपयोगी है।

कर्पूर (Kapoor) . यह दाहहर एव दर्दनाशक है कफ निकालने वाला, फेफडो का शोथ एव अतिसार मे उपयोगी है।

उपयोग :

यह छोटे बच्चो के लिए अमृततुल्य स्वादिष्ट एव पौष्टिक पेय है। इसके सेवन से बच्चो की कमजोरी, अपच, मरोड़, अजीर्ण, बदहजमी, पेट फुलना आदि तकलीफे दूर होती है। इसके सेवन से दात सुगमता से निकलते है।

सेवन विधि :

नवजात शिशु को 8 से 10 बूंद सुबह-शाम। 6 माह से 1 वर्ष के बच्चों के लिए आधा चम्मच एव 1 वर्ष के ऊपर के बच्चो के लिए 1 से 2 चम्मच दिन मे 2 या 3 बार पानी, दूध या फलो के रस के साथ देना चाहिए या चिकित्सक की सलाहनुसार लेना चाहिए।

पैकिग . 100 मि. लि. पैक मे।

●●

त्रिमूर्ति दन्तमंजन लाल
DANTMANJAN LAL
परिवार भर के लिए उपयोगी

घटक :

नौसादर, काली मिर्च, सेलखडी, पीपरमेन्ट एव स्वर्ण गेरू।

गुण-धर्म :

नौसादर (Ammonia Chloride) . यह मुख-शुद्धि, दातो को चमकीला बनाता है। यह श्वास सस्थान को उत्तेजित करके उसमे चिपके हुए श्लेष्मा को पतला करके निकाल देता है। मसूडो की सूजन दूर करता है

कालीमिर्च (Piper Nigrum) . मुख की दुर्गन्ध, दात मे कीड़ा, दात दर्द मे लाभप्रद है।

सेलखडी यह दातो को चमकीला, दातो पर जमी मेल को हटाने मे सहायक, मसूडो की मवाद को रोकता एव दांतो को मजबूत बनाने मे सहायक है।

पीपरमेट (Oil Piperment) . यह मुख शुद्धि एव शीतकर, दुर्गन्ध-नाशक है।

स्वर्ण गेरू (He Motitc) दातो के रक्त स्राव को रोकता है। मसूडो की सूजन कम करता है। दातो को चमकीला बनाता है।

उपयोग :

मसूड़ो मे खून आना, मवाद आना, पायरिया, मुह की दुर्गन्ध आदि को दूर कर दात मजबूत व नीरोग बने रहते है।

प्रयोग विधि :

सुवह-शाम एवं भोजनोपरांत ऊंगली से दांतों को इस मंजन की सहायता से माजना चाहिए या चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिंग : 100 एव 200 ग्राम पैक मे।

त्रिमूर्ति डायबीटा फोर्ट

DAIBITA FORTE

[CAP SULE]

मधुमेह, इक्षुमेह एवं बहुमुत्र में उपयोगी

घटक :

गुडमार, नीम पत्र, बेल पत्र, जामुन गुठली, शिलाजित, चिरायता, हल्दी, काली जीरी, मेथी, करेला बीज, मकोय, बग भस्म।

भावना गुलर एव गिलोय स्वरस।

गुण-धर्म

गुडमार (Gymnema Sylves're) इससे यकृत की क्रिया में सुधार होकर मधुजन सचय की शक्ति बढती है। जिससे रक्तगत शर्करा की मात्रा कम हो जाती है। अग्नाशय, अधिवृक्क एव अवटु ग्रथियो के स्राव मे सहायता मिलती है। जिससे अप्रत्यक्षतया यकृत मे ग्लूकोज को ग्लाइकोजन के रूप मे सचित करने की शक्ति बढती है। इसमे रेजिन, क्लीव तत्व, ऐल्ब्यूमिन तत्व, कैलिसयम आक्जेलेट, गिम्नेमिक एसिड, क्वर्सिटाल, शर्करा पाचक किण्व पाए जाते है।

नीम पत्र (Azadırahta Indıca) यह यकृदुत्तेजक, कटु पौष्टिक, रक्तशोधक, दाहप्रशमन, इक्षु शर्करा एव द्राक्षशर्करा मे उपयोगी होता है

बेल पत्र [Aegle Marmelos Correa] . यह मूत्रगत शर्करा को कम करने वाला, इसमे मार्मेलोसिन नामक तत्व पाया जाता है जो शर्करा को कम करने मे सहायक है।

जामुन गुठली [Syzyglum Jambolans] : इसमे जम्बूलिन नामक ग्लूकोसाइड, गैलिक एसिड, क्लोरोफिल, ऐल्ब्यूमिन नामक तत्व पाए जाते है जो मधुमेह मे उपयोगी होते हैं।

शिलाजित [Silagit] : यह पांडु, शोथ, मधुमेह, सब प्रकार के प्रमेह, मूत्र मे आने वाली शर्करा को समाप्त करता है। शरीर को पुष्ट करने मे सहायक है।

चिरायता [Swertia Chirata] : इसमे चिरेटिन $C_{52} H_{96} O_{30}$ एवं ओफेलिक एसिड $C_{26} H_{40} O_{20}$ सत्व पाए जाते है। चिरेटिन अक्रि-स्टली एव अत्यन्त तिक्त ग्लूकोसाइड होता है इसके अतिरिक्त $C_6 H_8 O_4$ एव ओलिक, पामिटिक एव स्टियरिक एसिडस तथा फाइटास्टेरोल नामक तत्व शर्करा कम करने मे उपयोगी है।

हल्दी [Curcuma Domestica] : इसमे कर्कुमेन $C_{21} H_{20} O_4$ पाया जाता है साथ ही स्टार्च एव एल्ब्यूमिन तत्व पाए जाते है। जो रक्त प्रसादन, रक्तवर्धक,श्लेष्मनि सारक एव रक्त स्तम्भक होते है। यह प्रमेहघ्न मूत्र विरजनीय होती है।

कालीजीरी (Centratherum Anthelminticum] · इसमे टैनिन, रेजिन एव फ्लोब्राफीन तत्वो का सगठन होने के कारण मधुमेह मे उप-योगी है।

मेथी (Trigonella Foenum Graecum) : इसमे कोलीन एव ट्रिगोनेलीन नामक दो क्षारोद पाये जाते है जो मधुमेह मे लाभप्रद है।

करेला बीज (Momordica Charantia) . यह इन्सुलीन की आवश्यकता को समाप्त करता है। पेशाब की शर्करा को शनै. शनै. बन्द होती है। रक्त शुद्धि मे भी यह सहायक है।

मकोय (Solanum Nigrum) . इसमे Solanine नामक ऐल्के-लाइड पाया जाता है। जो मधुमेह व इक्षुमेह मे लाभप्रद है।

बग भस्म (Bang Bhasma) · शुक्रप्रमेह, बहुमूत्र मे यह बहुत उपयोगी है। इससे शुक्रस्थान दोनो पुष्ट होते है। इनके पुष्ट होने से रस-रक्तादि धातु पुष्ट होकर शरीर बलवान होता है अधिक पेशाब को कम करने मे उपयोगी है।

उपयोग :

आयुर्वेद मे उल्लेखनीय जडी–बूटियों से निर्मित इस औषधि को एक सुरक्षित और प्रभावकारी असर के लिए प्रयोग मे लिया जा सकता है। यह कैप्सूल रोगियो के रक्त एव पेशाब मे शर्करा के अनुपात में गिरावट लाकर उनमे कार्बोहाइड्रेट पचाने की शक्ति लाती है। इसमें यकृत को ठीक करने की क्षमता है।

'डायबीटा' के प्रयोग से मधुमेह और बहुमुत्र मे लाभ मिलता है, मुत्र धारण की शक्ति बढती है।

सावधानी मधुमेह से पीड़ित रोगी को सीमित मात्रा मे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और चिकनाई लेनी चाहिए।

सेवन विधि :

1 से 2 कैपसूल दिन मे चार बार पानी के साथ अथवा चिकित्सक की निर्देशानुसार।

पैकिंग 20 कैपसूल

त्रिमूर्ति गैसपा वटी

GAISPA VATI

उदर वायु शमनार्थ

घटक :

चित्रक छाल, कलौजी, सौंठ, यवक्षार, पीपल, पोदीना, पचलवण, कालीमिर्च, सज्जीक्षार, हीग, पीपलामूल, कुलन्जन, अजवायन, चव्य, जीरा सफेद आदि।

गुण धर्म :

चित्रक (Plumbago Indica) यह दीपन–पाचन है। पेट के दर्द को शात करती है।

कलौजी (Kalongi) : यह भूख को बढाती है। पेट दर्द को शात करती है पाचक है।

सोठ (Zingiber Officinale) . यह आमवातनाशक, वीर्य वर्धक, अफारा, पेट का दर्द, कब्ज नाशक, कृमि एव गुल्मनाशक है। यह गरिष्ठ भोजन को पचाने मे सहयोगी है।

यवक्षार (Yavkchar) यह जल्दि पच जाने के कारण दीपन व पाचन होता है। यह गुल्म प्लीहा को नष्ट करता है। उदरशूल, अफारा, अम्लपित में पित को शात करता है। मूत्रल है।

पीपल [Pipper Long] यह पेट के दर्द को खत्म करती है। यह पाचक भूख बढाने मे सहायक है।

पोदीना (Menthe Sativa) यह कफ–वात को खत्म करता है। पेट के दर्द को शात करता है दीपन, रोचक है। उदर वायु को निकालता है

पचलवण : ये पाचक, शामक, भूख को बढाने वाले उदर–शूल को खत्म करने वाले, पित एव कफ को बाहर निकालने मे सहायक होते है।

काली मिर्च (Piper nigrum) यह कफ वातशामक, दीपन,पाचक मूत्रल, अग्निमाद्य, अजीर्ण, प्रमेह, श्वास-कास व उदरशूल को दूर करती है।

सज्जी यह भूख को बढाती है। समस्त प्रकार के उदर रोगो मे उपयोगी है। पाचन, वायु का नाश करती है। गुल्म एव आध्मान रोग नष्ट करती है।

हीग (Ferulla Assafoetida) : यह कफ वातनाशक, उदरशूल, अफारा, जी मचलाना, कब्ज़नाशक, एव पाचक है।

कुलन्जन (Alpinia Officinarum) : यह कफ वातनाशक, दीपन पाचक है, श्वासहर है। भूख को बढाती है।

चव्य (Piper Chaba) . यह कफ वातशामक है। दीपन, पाचन व पेट के दर्द को शात करती है। प्यास कम करती है। उदर वायु को नष्ट करती है।

अजवायन (Trachyspermum ammi) यह दीपन, पाचक, वातानुलोमन, पेट के दर्द को ठीक करती है। उदर के कृमि व जीवाणु का नाश करती है।

सफेद जीरा (Cuminum Cyminum) यह अग्निमाद्य, अजीर्ण, पेट का दर्द, सग्रहणी, रक्तविकार, कफ-वातशामक, दीपन व पाचक है।

उपयोग :

जो लोग भारी (गरिष्ठ) भोजन अधिक करते है पहले का भोजन पचने से पूर्व ही दुबारा भोजन कर लेते है। उन्हे पेट के अनेक रोग घेर लेते है। उदावर्त रोग की सम्प्राप्ति हो जाती है। 'गैसापा वटी' आमाशय और अन्त्र मे सचित वायु को दूर करती है अपच्चन, उदरशूल, घबराहट, आमाशय और अन्त्र की शिथिलता, अफारा, मलावरोध क्षुधानाश आदि विकारो मे लाभप्रद है।

प्रयोग विधि

2–2 गोली दिन मे 4 बार जल के साथ या चिकित्सक की सलाह–नुसार।

पैकिग · 100 गोली बॉटल पैक मे।

त्रिमूर्ति कुन्तल पाउडर
KUNTAL PGWDER
बालों को लम्बा चमकीला बनाने के लिए

घटक :
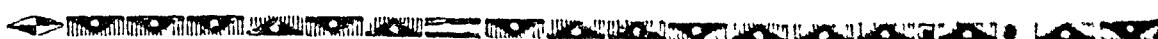
शिकाकाई, छिलका अरीठा, मुलतानी मिट्टी।

गुण-धर्म :

शिकाकाई (Acacio Concinna) इसमे सेपोनीन 11 2, मेलिक ऐसिड 12 75%, रेजिन 1%, ग्लूकोज 13.9% गोद 21 5 प्रतिशत होने के कारण यह बालो को चमकीला, लम्बा व मुलायम करता है। यह सिर की जुऐ एव लीके मारने मे सहायक है। बालो के झडने से रोकती है।

अरीठा छिलका (Sapindus Trifol atus) यह सिर की जुऐ व लीके मार उन्हे अत्यन्त मुलायम और रेशम के समान सुहावने बनाता है। बालो को काला कर मेल भी साफ करता है।

मुलतानी मिट्टी (Multani) यह बालो को चिकना, चमकीला एव रेशम के समान बनाती है। सिर के खोरे को नष्ट करती है।

उपयोग :

यह पाउडर साबुन के स्थान पर बालो को धोने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसके निरन्तर उपयोग से बालो का झडना बन्द हो जाता है। यह बालो को मुलायम व श्याम बनाकर बालो को लम्बा करता है। बालो व सिर की खुश्की दूर कर मस्तिष्क व नेत्रो के लिए भी लाभप्रद है, मुंह व आखो के नीचे की झाईयों पर इसका लेप करने से झाईया दूर होती है।

प्रयोग विधि :

बालो को साधारण या गुनगुने पानी से अच्छी प्रकार भिगोकर दो चम्मच 'कुन्तल पाउडर' के घोल से सिर को भली प्रकार से साबुन मसलने की भाति मलकर धोना चाहिए।

पैकिग 100 व 200 ग्राम पेक्स मे।

चेतावनी केवल बाहरी प्रयोग के लिए है।

त्रिमूर्ति कर्ण बिन्दु
KARAN BINDU
कान के रोगों के लिए उपयोगी

घटक :

धतूर स्वरस, सुदर्शन स्वरस, कपूर तेल आदि।

गुण–धर्म :

धतूर (Datura Innoxia) : यह कान के दर्द को शात करता है। कान मे आइ सूजन को दूर करता है। कर्णस्राव, व्रण कृमि आदि को ठीक करता है।

सुदर्शन (Crinum Zcylnnicum) : यह कान दर्द, सूजन को दूर करता है। कान मे फुन्सी को दूर करता है।

कपूर (Camphor) : यह कान के घाव को भरने वाला, सूजन, पीडा एव दर्द को दूर करने वाला होता है। इससे कान मे ठण्डक पहु–चती है।

उपयोग :

कान दर्द, पीप आना, नाडी-व्रण आदि कान के रोगो मे लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त पुराने से पुराने दुर्गन्धयुक्त, कर्णस्राव, व्रण आदि कान के समस्त रोगो मे उपयोगी है।

प्रयोग विधि :

दर्द के समय अथवा सुबह–शाम कान को अच्छी प्रकार से साफ करके 3–4 बून्द कर्ण विन्दू की डालनी चाहिए अथवा चिकित्सक के सलाहनुसार।

पैकिग 5 व 10 मि लि पेक मे।

विशेष · केवल बाहरी प्रयोग हेतु।

त्रिमूर्ति एम. सी. फोर्ट

M C. Forte (Capsule)

स्त्रियों के मासिक धर्म को जारी करने में उपयोगी

घटक :

घी क्वार, उलट कम्बल, सौठ, बीज मूली, बीज गाजर, लवग, मोयाबीज, पपीता बीज।

गुण–धर्म :

घी क्वार (Aloes Indica) इसका सक्रिय घटक 'एलोइन' होता है जो ग्लुकोसाइडस का मिश्रण होता है। इस एलोइन मे वार्वेलोइन, आइसो वारबेलोइन एव एलो-इमोडिन पाया जाता है। घी क्वार तीक्ष्ण होता है। यह मूत्रल, आर्तजनन एव गर्भस्त्रावकर होता है। रुके हुए मासिक धर्म को शुरु करने मे उपयोगी है।

उलट कम्बल (Abroma Augusta) : यह तीक्ष्ण, उष्ण एव रुक्ष होती है। गर्भाशययोत्तेजक, आर्तवजनन, वेदनास्थापन एव गर्भाशयबल्य

इसका मुख्य कार्य है । चूंकि इसकी मुख्य क्रिया गर्भाशय पर होती है इससे आर्तव साफ एव नियमित हो जाता है । रजोरोध एव कष्टार्तव आदि विकृतिया इससे दूर होती है ।

सौंठ (Zingiber Officinals) · यह रूक्ष, तीक्ष्ण, मधुर एव उष्ण होती है । यह दीपन, शूलप्रशमन, उत्तेजक का कार्य करती है ।

बीज सोया (Anethum Fructus) इसमे एपिओल $C_{12}H_{14}O_4$, एनीथीन $C_{10}H_{16}$ पाया जाता है । यह रूक्ष, तीक्ष्ण, वेदनास्थापन, दीपन, पाचन, आर्तवजनन, स्तन्यजनन, स्वेदजनन होता है ।

बीज मूली (Raphanus Sativus) · यह रूक्ष, उष्ण, त्रिदोषहर, वातानुलोमन, यकृदुत्तेजक, यकृत प्लीहा शोथहर, मूत्रल, आर्तवजनन आदि मे उपयोग होते है ।

बीज गाजर (Daucus Carota) : यह आर्तवजनन, गर्भाशय सकोचक, गर्भपात कर, शोथहर होते है । रूके हुए मासिक धर्म को शुरु करने सहायक है ।

लवग (Caryphyllum) . यह गर्म एव शुष्क होती है । यह लालस्रावजनक, वातानुलोमन, शूल प्रशमन, मूत्रजनन, वाजीकरण होती है । गर्म होने के कारण इसका असर गर्भाशय पर पडता है । रुकी हुई महावारी शुरु हो जाती है ।

बीज पपीता (Carica Papaya) : इसमे विटामिन 'ए' 'बी एव 'सी' पाया जाता है । यह रूक्ष,तीक्ष्ण एव उष्ण प्रकृति का होता है । इसका मुख्य कार्य शोथहर, आर्तवजनन, स्वेदजनन, रक्तशोधक, मासिक धर्म रूक जाने पर उसे पुन शुरु करने मे उपयोगी है ।

उपयोग :

स्त्रियो के मासिक धर्म रुक जाने पर कमर और पेडु मे दर्द होना, हाथ, पैर के तलुओं तथा आखो मे जलन होना, रुके हुए मासिक धर्म (M C) को जारी करना एव मासिक धर्म की खराबी से उत्पन्न हुए उपद्रव को दूर करता है ।

सेवन विधि :

एक से दो कैप्सूल सुबह, दोपहर एव साय को गम जल या गर्म दूध से अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार ।

नोट : इसका प्रयोग गर्भावस्था के दौरान नही करना चाहिए ।

पैकिग 6 कैप्सूल

त्रिमूर्ति **फिजियोटोन**

PHYSIOTONE

बच्चे बुड्ढे स्त्री–पुरुष सभी के लिए सुमधुर टॉनिक

घटक :

द्राक्षासव, अश्वगधारिष्ट, दशमूलारिष्ट, कुमार्यासव, लोहासव, चीनी।

गुण–धर्म :

द्राक्षासव–ग्रहणी, बवासीर, क्षय, दमा, खासी, काली खासी, गले के रोग, मस्तक रोग, नेत्र रोग, रक्त दोष, कुष्ठ, कृमि, पाडू, कामला, दुर्बलता, कमजोरी, आम ज्वर आदि मे लाभप्रद। पौष्टिक व बल–वीर्य वर्धक। अरुचि, आलस्य व थकावट और बैचेनी को दूर कर शारीरिक उत्–साह बढाता है। इसके सेवन से शात नीद आती है। मल-शुद्धि होती है और मन प्रफुल्लित रहता है।

रक्तार्श या षितार्श पर इसका सेवन हितकारक है। यदि उदार्वत (आमाशय से गैस का ऊपर आना) रोग प्रबल न हो गया हो तो इससे अधिक लाभ होता है।

नव-प्रसूता स्त्री को अपथ्य सेवन कराने पर या बार–बार गर्भपात होने वाली स्त्री को रक्त गुल्म हुआ, गर्भधारण के सदृश लक्षण प्रतीत हो तो द्राक्षासव विशेष गुणकारी है।

अश्वगधारिष्ट–यह दीपन, पाचक, वृष्य और वातनाशक है प्रमेह, स्वरभगता, नामर्दी, उन्माद, शोष, बवासीर, मूर्च्छा, मस्तिष्क की दुर्बलता भ्रम, मृगी, वात-व्याधि, हृदय रोग मे लाभ करके शरीर मे स्फूर्ति, वीर्य की शुद्धि करता है। यह हिस्टीरिया, मूर्च्छा और उन्माद के लिए उतम है। यह अग्नि प्रदीपक होने से पाचन विकृति को दूर करता है। वात-वाहनियो और रस रक्त आदि धातुओ को सबल बनाता है प्रसूता की निर्बलता को दूर करने मे हितावह है।

दशमूलारिष्ट–धातु, क्षय, खासी, श्वास, बवासीर, उदर रोग, प्रमेह, अरुचि, पाडू सब प्रकार की वात-व्याधिया, शूल, श्वास, वमन, प्रदर,

कुष्ठ, भगन्दर, मूत्रकृच्छ, अम्ल पित, प्रमूत रोग, गर्भाशय की अशुद्धि अग्नि-माद्य, कामला आदि रोग नष्ट होते है।

दशमूलारिष्ट—प्रसूता स्त्रियो के लिए अमृत है। रक्तस्राव के कारण आयी हुई कमजोरी और निर्बलता इससे दूर होती है। इसके सेवन से बच्चे को दूध भी अधिक मिलता है। गर्भस्राव व गर्भपात की शिकायत को दूर करता है।

वातज श्वास—रोग मे इसका अच्छा उपयोग होता है। श्वास के साथ शुष्क कास होने पर वह भी शात होती है।

अस्थिक्षय मे विशेष लाभप्रद। कमर दर्द, अस्थि मे दर्द, चलने पर दर्द, मन्द मन्द ज्वर मे उपयोगी हैं।

कुमार्यासव-गुल्म परिणाम शूल, यकृत, प्लीहा, नलाश्रित बाय मेदो वायु, जुकाम, श्वास, दमा खासी, अग्निमाद्य, कफ और मन्द ज्वर, पाडू, कमजोरी, प्रमेह, अपस्मार, स्मृद्धिनाश, मूत्रकृच्छ, अश्मरी, कृमि रोग, रक्त-पित, मासिक धर्म का न होना या कम होना। शक्ति क्षय, गर्भाशय के दोष आर्तव की अशुद्धि, अम्ल—पित, सग्रहणी, वात-विकार को दूर करते है। पाचक, कोष्ठ का शोधन करने वाला, भूख बढाने वाला और पौष्टिक है।

ऐसे बच्चे जो अन्न खाते है उनके लिए यह दवा बहुत लाभदायक है। पेट का खराब रहना, तिल्ली का बढना, अपच दस्त आदि बच्चो के रोगो मे लाभप्रद है। पेट के विकार मे इसका सेवन बच्चो और बुड्ढो तक के लिए किया जाता है।

स्त्रियो के दर्द मेदोवृद्धि, रजोदर्शन के पेट मे दर्द रहना, दमा, खासी अम्ल-पित, पेट मे वायु गोला, प्रतिश्याय, दुर्बलता, शक्तिहीन होना आदि के कारण गर्भधारण न होना।

यह यकृत को बल देने वाला है। अतएव यकृत वृद्धि होने पर जब पित का स्राव अच्छी तरह होने मे बाधा आती है तब इसके उपयोग से लाभ होता है। पुराने प्लीहा रोग मे इससे जल्द आराम होता है।

लोहासव—पाडू, गुल्म, सूजन, अरुचि, सग्रहणी, जीर्णज्वर, अग्नि—माद्य, दमा, कास, क्षय, उदर-अर्श, कुष्ठ, कण्डू, तिल्ली, छद्रोह और यकृत,

प्लीहा की विकृति को नष्ट करता है। जब रक्त-कणों की कमी के कारण पीला हो जाता है तब मन्दाग्नि, बद्धकोष्ठता, कमजोरी, किसी काम मे मन न लगना अनुत्साहित बना रहना आदि उपद्रव हो जाते है। इसमे लोहासव विशेष है।

उपयोग :

यह आरोग्यप्रद एव रोगहर औषधि के रुप मे सुमधुर टॉनिक है। बीमारी मे से जल्दी आरोग्य लाभ करने मे एव धीरे-धीरे रोग मुक्त होने के समय उपकारी है।

'फिजियोटोन' भारी एव अधिक भोजन कर लेने के बाद उत्पन्न कठिनाईयो, बेचैनी, पेट का फुलना आदि से छुटकारा दिलाता है यह जठराग्नि की अनियमिलताओ को ठीक करता है। पाचन क्रिया बढाता हैं। कब्ज से छुटकारा दिलाता है।

'फिजियोटोन' चितभ्रम, अनिद्रा, याददाश्त की कमी, सिर-दर्द को दूर करता है। बल, विक्रम, काति और बुद्धि की वृद्धि करता है।

'फिजियोटोन' नाडी मण्डल को पुन चेतनत्व प्रदान कर पाचन क्रिया को प्रबल बनाता है जीवन शक्ति व खाने की रुचि को बढाता है। यह लैगिक समागम मे वीर्य स्तम्भक शक्ति को बढाने मे सहायक है। लैगिक अक्षमता, लैगिक नाडी दौर्बल्य, शुक्रमेह, मानसिक जातीय बाधाओ एव अन्य काम जन्य व्यतिकर्मो तदुपरात अन्य किसी भी चिकित्सा के साथ दिया जाना लाभप्रद है। स्त्रियो के ठण्डेपन मे उपयोगी है।

'फिजियोटोन' स्मृति शक्ति को बनाये रखने मे सहायक है। तनाव से मुक्ति दिलाता है। एव प्राकृतिक ढग से शातिपूर्ण निद्रा लाने मे सहायक है।

क्षय-रोग मे 'फिजियोटोन' एक वरदान है। यह शरीर की रचना को उत्तेजित करता है। शरीर मे नये रक्त का सचार करता है। लौह की अपर्याप्त एव रक्तहीनता, यकृत की निष्क्रियता, यकृत-शोथ, थकान त्वचा के आवरण एव आख के पर्दो की कातिहीनता आदि मे उपकारी है यह मस्तिष्क को तरोताजा रखता है।

हृदय रोग मे भी इसका सेवन बहुपयोगी है । अन्य चिकित्सा के साथ लिया जा सकता है ।

स्त्री-रोगो की तकलीफो मे एवं प्रसूति के पश्चात स्थूलता व स्नायुओ की शिथिलता को रोकने मे यह स्त्रियो के लिए वरदान तुल्य है ।

फिजियोटोन' हर मौसम व हर आयु वर्ग के लिए स्त्री-पुरुष, बाल-युवा-वृद्ध सभी के लिए एक अमृततुल्य सुमधुर टानिक है ।

सेवन विधि :

बडो को 15 से 30 मि. लि. तक दिन मे 2 बार भोजनोपरांत सम-भाग जल के साथ एव बच्चो को 4 से 10 मि. लि. तक दिन मे 2 बार अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार ।

पैकिंग . 225 एवं 360 मि. लि की आकर्षक बॉटल पेक्स मे ।

●●

त्रिमूर्ति पाचनामृत

PACHNAMRIT

उदर रोगों के लिए स्वादिष्ट पेय

घटक :

अदरक स्वरस, नीम्बू स्वरस, घृतकवार स्वरस, काला नमक, साम्भर नमक, सैंधा नमक, नौसादर, हींग ।

गुण धर्म :

अदरक (Ginger) यह अफारा, खट्टी डकारे आना, पेट का दर्द, जी मचलाना, कफ एव खासी मे उपयोगी होती है ।

नीम्बू (Citrus Aurantifolia) : इसमे साइट्रिक एसिड, फास्फो–

रिक एसिड, मेलिक एसिड एव शर्करा का सगठन होने के कारण पितशामक तृष्णा, निग्रहण, दीपन, पाचन, रक्त-शोधक, मूत्रल होता है। इसमे प्रचुर मात्रा मे विटामिन 'सी' पाया जाता है। उदर-शूल, अफारा, उल्टी होने की इच्छा होने आदि मे लाभप्रद ।

घी कवार (Aloe Barbadensis) : इसमे एलोइम पाया जाता है। जो ग्लूकोसाइडस का मिश्रण होता है। जिसके कारण यह दीपन, पाचन यकृदुतेजक, विरेचन, रक्तशोधक एव मूत्रल है।

काला नमक, साम्भर नमक, सैंधा नमक : ये पाचक, पित एवं कफ प्रति-कारक है। भूख को बढाते है। अपान वायु को बाहर निकालते हैं। जी मिचलाना, उबाक आदि मे लाभप्रद है।

हीग (Ferulla Assafoetida) : यह पेट दर्द, अफारा, जी मिच-लाना, कब्जिनाशक, कृमि व गुलमनाशक एवं पाचक है।

उपयोग :

यह उदर रोगो के लिए अमृततुल्य है। स्वादिष्ट एवं पाचक है। प्लीहा, यकृत-दोष, पाडु, मन्दाग्नि, कब्ज, अफारा, अपचन, अग्निमाद्य उदर पीडा, अरुचि आदि मे लाभप्रद है।

सेवन विधि :

10 से 15 मि. लि. तक भोजनोपरांत बराबर का जल मिलाकर अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिग : 200 मि. लि. पेक्स मे।

●●

त्रिमूर्ति लीवटोन (सीरप एवं ड्राप्स)

LIV–TONE (Syrup & Drops)

लीवर सम्बन्धी रोगों के लिए

घटक :

गिलोय, कासनी, सोठ, भृंगराज, पित पापड़ा, काली तुलसी, निसोत बायबिडंग, पुनर्नवा, बंसलोचन, गुलाब पुष्प, पीपल, रोहितक एव शक्कर।

गुण–धर्म :

गिलोय (Tinospora Cordifolia) : यह त्रिदोषनाशक, तिक्त–बल्य, ज्वरघ्न, रक्तशोधक तथा कुष्ठ एवं वात रक्त शामक है।

कासनी (Cichorium Intybus) : यह कफ पितशामक, दाहप्रशमन, दीपन, शोथहर, यकृदुत्तेजक, तृष्णानिग्रहण, पितसारक, रक्तशोधक, मूत्रल, दाहप्रशमन है।

सोठ (Zingiber Officinale) : यह आम वातनाशक, उदर-रोग उदर शूल, कफ को दूर करती है।

भृंगराज (Eclipta Alba) : यह वात कफनाशक, सूजन को कम करने वाला, यकृदुत्तेजक शूल-प्रशमन आम पाचन, दीपन, पाचन, पित–विरेचक एव रक्त शोधक है।

पित पापड़ा (Fumaria Officinalis) : यह समस्त यकृत विकृतियों मे उपयोगी है। पितशामक, तृष्णाशामक, दीपन, ग्राही, यकृदुत्तेजक, रक्तशोधक एव दाहशामक है।

तुलसी (Ocimum Sanctum) : यह कफ-वातशामक है। शरीर पर आई शोथ को दूर करती है। यह दीपन, पाचन है। इससे रक्त शुद्ध होता है। कीडो को मारती है। कफ को बाहर निकालने मे सहायक है।

निशोथ (Operculina Turpethum : यह पित-कफशामक, शोथहर एव रेचक होता है।

बायबिडग (Embelia Ribes) : इसमे एम्बेलिन $C_{18} H_{28} O_4$ पाया जाता है। यह दीपन, पाचम, उदर कृमिनाशक, रक्तशोधक, मूत्रल, रसायन एव कुष्ठनाशक है।

पुनर्नवा (Boerhaavsa Diffule) · इसमे $C_{32} N_{46} O_6 N_2$ पाया जाता है। पोटासियम नाइट्रेट सल्फेटस एव क्लोराइड्स का इसमे सगठन होता है। यह त्रिदोषहर, शोथहर, दीपन, अनुलोमन, रेचन, रक्त-वर्द्धक, कास हर, मुत्र जनन होता है।

बंसलोचन (Bambusa Arvndinace) : यह वात पितशामक, कफ को निकालने वाला मूत्रल, श्वास कास मे उपयोगी होता है।

गुलाब (Rosa Alba) यह शरीर की सूजन कम करके उत्तमागो को बल प्रदान करता है एव पित की तीक्ष्णता को शांत करता है। दाह-शमन, ज्वरघ्न एव कब्जनाशक है।

पीपल [Pipper Long] यह रक्तवर्धक है। पाचन, अग्निवर्धक और प्लीहा वृद्धि को रोकती है। यह श्वास-कास मे भी उपयोगी है।

अतीस (Aconitum Heterophyllum) यह दीपन, पाचन, ज्वरातिसार नाशक, कृमिघ्न, छर्दि, कासनाशक होता है।

रोहितक (Tecomella Undulata) : यह रेचक, दीपन, प्लीहा, यकृत वृद्धिनाशक, रक्तशोधक, रक्त की कमी को दूर करने वाला होता है,

उपयोग :

यकृत शरीर के प्रधान अगो मे से एक प्रमुख अंग है। यह पित-रस का स्राव करता है और इसलिए यह पाचन-क्रिया एव भोजन को पचाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब यकृत मे कोई खराबी आ जाती है तो उसमे दर्द होने लगता है। मल कीचड के रग जैसा आने लगता है आख एव शरीर का रग पीला हो जाता है। स्वाद कषैला, भोजन की अरुचि, जी मिचलाना, उल्टी होने की इच्छा होना आदि उग्ररुप हो जाते है। अगर आरम्भिक अवस्था मे ध्यान न दिया जाय तो कामला, रक्तहीनता तथा इनके साथ-साथ जलोदरगत सूजन दिखाई पडती है। अर्थात यकृत का बढना, यकृत की कार्य शिथिलता यकृदात्युदर, पाडु, कामला, कमजोरी, पेट का फुलना, खून की कमी पतले दस्तो मे लिवटोन उपयोगी होता है।

बडो के लिए 2 से 4 चम्मच बच्चो के लिए आधा से 1 चम्मच

सेवन विधि :

शिशुओ के लिए 5 से 10 बून्द दिन मे 3-4 बार पानी, दूध या फलो के रस के साथ अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिग सराप 50 एव 100 मि. लि पैक्स मे।

ड्राप्स 25 मि. लि पैक्स मे।

त्रिमूर्ति शांतिवर्धक चूर्ण

SHANITVARDHAK CHURAN

पेट के रोगों में उपयोगी

घटक :

पीपल, सोंठ, काली मिर्च, बडी इलायची बीज, लौंग, सैंधा लवण, स्वर्ण गेरु, काला नमक, नौसादर, नीम्बूसत्व ।

गुण–धर्म :

पीपल [Pipper Long] : यह पाचन, अग्निवर्धक श्वास-कास मे उपयोगी है ।

सौंठ (Zingiber Officinale) यह वातनाशक, वीर्यवर्धक, कफ अफारा, पेट का दर्द एव कफ खासी को दूर करती है ।

काली मिर्च (Piper Nigrum) · यह कफ-वातनाशक, दीपन, पाचन, अग्निमाद्य, अजीर्ण, श्वास-कास मे उपयोगी है । पेट के दर्द मे लाभप्रद भी है ।

बडी इलायची (Amomum Suieulatum) : जी मचलाना, उल्टी, श्वास–कास मे उपयोगी, रोचक है ।

लौंग (Caryphyllum) : इसमे यूजिनोल होता है इसके अतिरिक्त टैनिक एसिड व राल होता है । लौंग मे 'केरियोफाइलिन नामक फाइटोस्ट रोल' तथा तन्तुमय अ श पाये जाते है जिसके कारण यह कफ-पितशामक, दीपन, पाचन, रुचिवर्धक, दर्द को कम करने मे सहायक होती है ।

सेंधा नमक, काला नमक · यह शामक, पाचक एव भूख बढाने मे सहायक होता है । जी मिचलाना, हिचकी, उबाक आदि मे उपयोगी है ।

स्वर्ण गेरु (Red Iron Oxide) यह गर्मी को कम करने वाला, हिचकी वमन मे लाभप्रद है ।

नौसादर (Ammonium Chloride` : यह त्रिदोष प्रकोपहर है । खाने को शीघ्र पचाने वाला, अफारा वमन उपयोगी है ।

नीम्बू (Citric Acid) · यह दीपन, पाचन, पितशामक, है। विटामिन 'सा' प्रचूर मात्रा मे होने से खून बनने मे सहायक है। अफरा दूर करता है।

उपयोग :

अजीर्ण, अफारा, हिचकी, वमन, अरुचि, दाह, शूल, हैजा और कृमि आदि रोगो को नष्ट करता है।

सेवन विधि :

2 से 5 ग्राम तक जल के साथ दिन 3–4 बार या वैसे ही चाटना चाहिए अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिग : 50 एव 100 ग्राम पेक्स मे।

त्रिमूर्ति सर्वगुण तेल

SARWAGUN OIL

केवल बाहरी प्रयोग के लिए

घटक :

त्रिफला, नीम स्वरस, सम्भालू स्वरस, मोम, गन्धा बिरोजा, शिलारस, राल, गुग्गुलु, कपूर, तारपीन तेल, इलायचो तेल, नीलगिरी तेल, तेल।

गुण धर्म :

त्रिफला : यह आवला, हरड एव वहेडा का सम्मिश्रिण है। यह सूजन को कम करने सभी प्रकार के चर्म रोग और रक्त विकार के लिए उपयोगी है।

नीम (Aza-irahta Indica) इसमे ओलीक एसिड, लिनोलीक, एसिड, पामिटिक एसिड, स्टियरिक एसिड पाया जाता है। जिसके कारण यह धाव को भरने, दर्द कम करने, जलन कम आदि मे क्षाभप्रद, कीटाण नाशक दूर करने मे सहायक है।

सम्भालु : यह घाव को भरने वाला, दर्दहर, मोच से पडने वाले दर्द को दूर करने मे सहायक है।

मोम (Wax) : यह घाव को भरने, दर्द को कम करने में उपयोगी है।

गन्धा बिरोजा (Pinus Longifolia) : यह रक्तरोधक, व्रणशोधन, सूजन को कम करने मे सहायक है।

शिलारस (iquid Storax) : यह व्रणरोपन, दर्द को कम करने वाला घाव भरने मे उपयुक्त है।

राल (Resina) हाथ–पैर का फटना, बिवाई मे यह उपयोगी है। घाव को जल्द भरती है।

गुग्गुलु (Bdellion) : यह शोथहर, व्रणशोधन, रक्त को रोकने मे सहायक है।

कपूर यह दाह–हर एव दर्दशामक है। यह त्वचा की पर से स्वेद को उडा देता है।

तारपीन का तेल . यह दर्द को सोखने वाला, व सडे हुए घाव को भरता है। वात–शूल, सिर दर्द मे भी उपयोगी है।

इलायची तेल · यह घावनाशक है। घाव भरने एव शुद्ध करने वाले तत्वो से युक्त है। ग्रन्थियो की सूजन मे उपयोगी है।

नीलगिरी तेल : यह दर्द आदि मे उपयोगी है सूजन को कम करता है। घाव को जल्द भरता है।

उपयोग ·

सर्वगुण तेल चोट, मोच, सूजन, सधिशूल व सब प्रकार के घावो मे लाभप्रद है। जले, कटे व पुराने से पुराने घाव, नासूर पर इसके प्रयोग से जल्द लाभ होता हैं। कान का दर्द, वर्ण स्राव मे उपयोगी है। नाक मे फुन्सी हो जाने पर उसे लगाने से फुन्सी ठीक हो जाती है।

प्रयोग विधि :

चोट लगने पर हल्के हाथ से मालिश करे। जख्म पर इसकी पट्टी करनी चाहिए। कान के रोगो मे कान मे 2–3 बून्द डालने से लाभ प्राप्त होता है। अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिग 25, 50, 100 एव 200 मि लि पेक्स मे।

नोट सर्वगुण तेल का प्रयोग करने के बाद हाथो को अच्छी तरह से धो लेना चाहिए।

त्रिमूर्ति सर्वगुण आयन्टमेन्ट

SURVAGUN OINTMENT

(सभी वात रोगों में मालिश के लिए)

घटक :

फुल पुदीना, तारपीन का तेल, निलगिरी तेल, इलायची तेल, ग्रायल विन्टर ग्रीन, वेसलीन।

उपयोग :

सर्वगुण ग्रायन्टमेन्ट मोच, सूजन, सन्धिशूल व सब प्रकार के वात–रोगो मे लाभप्रद है। कमर दर्द, पैरो मे दर्द, मरोड, बच्चो मे खेलते समय गिर कर मोच ग्रा जाना, सिर दर्द ग्रादि मे सर्वगुण ग्रायन्टमेन्ट की हल्के हाथ से मालिश करने पर दर्द से छुटकारा मिल जाता है।

प्रयोग विधि :

ट्यूब से थोडी सी मल्हम लेकर उगलियो की सहायता से सूजन एव दर्द वाले स्थान पर मलने से दर्द ठीक हो जाता है। इसका प्रयोग करने के पश्चात हाथो को साबुन से भली भाति साफ कर लेना चाहिए।

पैकिग 15 ग्राम ट्यूब पैकिग मे।

त्रिमूर्ति सारिको लिक्विड

SARICO

खाज–खुजली एवं रक्त विकार हेतु अत्युत्तम पेय

घटक :

अनन्तमूल, देवदारू, बडजटा, बावची, नागरमोथा, लोध्र, ककोल, ावला, सुगन्धबाला, गिलोय, मजीठ, सोमलत, कूडा छाल, खस, गोरख–ण्डी, श्वेत चन्दन, पित पापडा, लाल चन्दन, धायफूल, अजवायन, काली ाका, कुटकी, तेजपात, इलायची बड़ी, कूठ मीठा, सनाय पत्र, हरड बहेडा ादिर छाल, शक्कर।

ुण–धर्म :

अनन्तमूल (Hemidesmus Lndicus) इससे त्वचान्तर्गत रक्त ाहिनियो का विकास होकर रक्त मिश्रण उतम प्रकार से होने लगता है। ाह कुष्ठ देहदुर्गन्ता, मन्दाग्नि, कास, रक्त विकार, रक्त पित आदि मे उप-ोगी होता है।

देवदारू (Ceders Libani) . यह क्रिमिघ्न, व्रणशोधन, वात–कफ ामक, दीपन, पाचन, मूत्रजनन, प्रमेहघ्न आदि मे लाभप्रद है।

वडजटा (Ficus Bengalensis) : यह रक्त पितहर, रक्तस्तम्भक र्भाशय शोथहर, रक्त एव श्वेत-प्रदर मे उपयोगी है।

बावची (Psoraleae Semina) : यह वात कफनाशक है। दीपन ाचन एव पौष्टिक होती है। पेट के कीडो को मारती है। पेट को साफ रती है। चमडी मे एकरुपता लाती है।

नागर मोथा (Cyperus Scarlonsus) · यह कफ-वातशामक, ीपन–पाचन, ग्राही, कृमिघ्न, रक्तप्रसादन, मूत्रार्तजनन कफघ्न मे उपयोगी होता है।

लोध्र (Symplocaceao) : यह रक्त स्तम्भन, शोथहर, रक्त–शोधक एव कुष्ठघ्न होता है। इसके साथ ही स्त्रियो के गर्भाशयशोथ, गर्भ–स्राव एव रक्त व श्वेत प्रदर मे उपयोगी होता है।

ककोल [Cubebae Fructus] यह मूवल एव आर्तव प्रवर्तक है। रक्त को शुद्ध करती है।

आवला [Emblica Officinalis] इसमे गैलिक एसिड व एलेगिग एसिड पाया जाता है। पेक्टिज व विटामीन 'सी' प्रचुर मात्रा मे पाया जाता है। यह दीपन, पाचन, पितशामक, पौष्टिक, कब्जनाशक, शुक्रप्रमेह, स्वप्नदोष, रक्त की कमी, ववासीर, नेत्ररोग, खुजली आदि मे लाभप्रद है।

सुगन्ध वाला [Valeliana Indica] : यह त्रिदोपहर, शूलप्रशमन, सारक कफघ्न, कासहर, मूत्रजनन, कुष्ठघ्न आदि मे लाभप्रद है।

गिलोय [Tinospora Cordifolia] यह रक्त शोधक है। त्रिदोप शामक तिक्तबल्य ज्वरघ्न होती है।

मजीठ (Rubia Cardifelia) यह पाचक एव रक्त-शोधक है।

सोमलता (Ephedra) यह श्वास कास मे उपयोगी होती है।

कूडाछाल (Conessi Bark) . यह अतिसार, प्रवाहिका नाशक, दीपन, ज्वरघ्न, अर्शोघ्न मे उपयोगी होती है।

खस (Vetiveria Zazanioides) यह गर्मी को शात करने वाली मूत्रल, वमन, अतिसार नाशक है।

गोरखमुन्डी [Sphaeranthus indieus] . यह त्रिदोपशामक, शरीर की सूजन कम करने मे सहायक, रक्तशोधक, मूत्रल, दीपन व पाचन है।

चन्दन सफेद [Santalum Album] यह कफ पित्तशामक, तृष्णा-निग्रहण, रक्तशोधक, रक्त पितशामक, कफनि सारक, दाहप्रशमन अनेक त्वचा के रोगो को दूर करने मे सहायक है।

चन्दन लाल [Pterocarpus Santalinus] . यह कफ-पितशामक दाहशामक त्वचा को सुन्दर बनाने मे उपयोगी है। खून को साफ करती है।

पित्तपापडा (Fumaria Officinalis) यह समस्त यकृत विकृतियो मे उपयोगी है। पितशामक, तृष्णाशामक, दीपन, ग्राही, यकृदुतेजक, रक्त-शोधक एव दाहशामक है।

धायफूल [Woodfordia Fraticosa] इसमे 20% टैनिक एसिड पाया जाता है। यह कफ पितशामक, दाहप्रशमन रक्तस्तम्भन एव अतिसार प्रवाहिका नाशक है।

अजवायन [Tiachyspeimum Ammi] यह दीपन, पाचक, वातानुलोमन, शूलप्रशमन, जीवाणु एव उदर कृमि नाशक है।

काली मुनक्का [Vitis Vinifera] : यह वात पितशामक, तृष्णादाह, रक्त पितशामक, श्वासहर, कोष्ठमृदुकर, मूत्रल रक्तप्रसादन फेफडो को बल प्रदान करने वाली होती है।

कुटकी (Picrorrhiza Kurrooa) यह उच्च स्तर की रक्तशोधक कफनिस्सारक एव यकृत विकार नाशक है।

तेजपत्र (Cinnamomum Tamala) यह दीपन, पाचन, मस्तिष्क बलदायक, आमाशय को बल देने वाला, मूत्र–रोग दूर करने वाला होता है।

बडी इलायची (Cardamomi Fructus) . यह वात-कफ रक्त–पित, वमन, श्वास कास, खुजली, मूत्र–कृच्छ तृष्णानाशक है।

कूठ [Saussurea Lappa] यह कफ को बाहर निकालने मे सहायक, खून को साफ करता है।

सनाय पत्र [Cassia Angustifolia] · यह रक्तशोधक, कृमि–नाशक, शरीर की चमडी को सुन्दर बनाने मे सहायक होते है।

हरड (Terminalia Cbebula) : इसमे टैनिक एव गैलिक अम्ल होने के कारण दोपन व पाचन में उपयोगी है। एक रसायन एव त्रिदोष–हर है।

बहेडा (Terminalio Beierica) यह समस्त प्रकार के त्वचा रोगो मे उपयोगी है। श्वास कास को ठीक करता है। रक्त शुद्ध करता है।

खदिर छाल (Accoia Catechu) यह उच्च कोटि का रक्त–रक्तशोधक रक्तस्तम्भक है।

उपयोग :

सारिको के उपयोग से रक्त सचार मे उत्पन्न खराब विकारो एव हल्के ज्वर-कफ श्वास रोग दूर होने है। मु हासे फुन्सिया, रक्त की अशु–धिया, कसक-भरी हरारत एव त्वचा की विवर्णता मे सारिको अत्यधिक उपकारी है। यह रक्त के परिभ्रमण को नियमित बनाती है तथा स्वास्थ्य एव रग रूप प्रदान करती है।

यह खुजली, गर्मी के फोड़े, शीत पित एवं सभी त्वचा रोगों में उपयोगी है। कब्ज को दूर करता है। नवीन रक्त को बनाने में सहायक है।

सेवन विधि :

10 से 15 मि. लि. तक भोजनोपरात समभाग जल के साथ अथवा चिकित्सक की सलाहानुसार।

पैकिग : 225 व 450 मि. लि. पैक्स मे।

○○

त्रिमूर्ति सारिको टेबलेट
SARICO TABLET
रक्त दोष एवं खाज-खुजली के लिए

घटक :

अनन्तमूल, बडजटा, नागरमोथा, लोध्र, त्रिफला, गिलोय, श्वेत चन्दन, कूठ, गुग्गुलु, खदीर छाल, बावची, मजीठ आदि।

गुण धर्म

अनन्तमूल (Hemidesmus Indicui) इससे त्वचान्तर्गत रक्त वाहिनियो का विकास होकर रक्तमिश्रण उतम प्रकार से होने लगता है। यह कुष्ठ देहदुर्गन्धता मन्दाग्नि, कास, रक्त पित आदि मे उपयोगी है।

बडजटा (Ficus Bengalensis) . यह रक्त पितहर, रक्तस्तम्भक गर्भाशय शोथहर, रक्त एव श्वेत प्रदर मे उपयोगो है।

नागर मोथा (Cyperus Scariosus) . यह वात कफ नाशक है। रक्त प्रसादन मूत्रार्तवजनन, कफघ्न मे लाभप्रद।

लोध्र (Symplocaceao) यह रक्तस्तम्भक, शोथहर, रक्तशोधक एव कुष्ठनाशक है।

त्रिफला (Trifala) विटामीन 'सी' की उपस्थिति के कारण यह दीपन, पाचन, पितशामक मे लाभप्रद होता है। इससे रक्त की कमी, स्वप्नदोप, शुक्रप्रमेह, कब्ज दूर होती है खून को साफ करता है मुह पर काति लाता है।

गिलोय (Tinospara Cordifolia) · यह रक्त शोधक है। त्रिदोष शामक तिक्त बल्य एव ज्वरघ्न होती है।

श्वेत चन्दन (Santalum Album) · यह उच्च स्तर का रक्त शोधक होता है। इसके साथ ही रक्त पितशामक, कफनि·सारक, मूत्रजनन, कुष्ठघ्न, दुर्गन्धहर एव त्वचा के रोगो को दूर करता है।

कूठ (Saussurea Lappa) : यह कफ निस्सारक, श्वासहर, शुक्र शोधन का कार्य करता है।

गुग्गुलु (Beellion) यह शोथहर, रक्तशोधक, रक्त एव श्वेत कणो की वृद्धि करने वाला, शीतप्रशमन, दीपन, गण्डमाला नाशक होता है।

खदिर छाल (Acacia Catechu) : यह उच्च-कोटि का रक्त-शोधक रक्तस्तम्भक है।

बावची (Psoraleae Semina) · यह पेट को साफ करती है। चमडी मे एकरुपता लाती है। पेट के कीडो को नष्ट करने मे सहायक है।

मजीठ (Rubia Cardifoli) · यह रक्तशोधक एव पाचक होती है।

उपयोग :

सारिक के उपयोग से रक्त सचार मे उत्पन्न खराब विकारो एवं हल्के ज्वर कफ श्वास दूर होते है। मु हासे फुन्सिया, रक्त की अशुद्धिया, कसक भरी हरारत एव त्वचा की विवर्णता मे सारिको अत्यधिक उपकारी है यह रक्त के परिभ्रमण को नियमित बनाते है तथा बेहतर स्वास्थ्य एव रग रुप प्रदान करती है।

यह खुजली, गर्मी के फोडे शीतपित एव सभी त्वचा रोगो मे उप-योगी है। कब्ज को दूर करता है। नवीन रक्त बनाने मे सहायक है।

सेवन विधि :

1 से 2 गोली दिन मे 3–4 बार जल के साथ या 2 गोली सारिको लिक्विड के साथ भोजनोपरात अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिग · 100 टेबलेट पैक्स मे।

त्रिमूर्ति त्रिमोटोन

TRIMOTONE

खट्टी–मीठी, स्वादिष्ट अग्निप्रदीपक
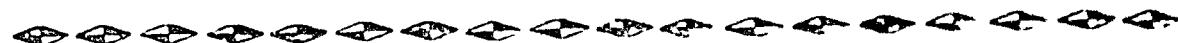
घटक :

अनारदाना, कालीमिर्च, नौसादर, गुलकन्द, अकरकरा, काला नमक, मुन्नका, नीम्बू रस, पीपल, चीनी, अदरक स्वरस ।

गुण–धर्म :

अनारदाना [Punica Granatum] . यह अजीर्ण, अरुचि नाशक है । कफ को निकालने वाला, वात कफनाशक होता है । यकृत और हृदय बलकारक एव दाह प्रशमन, होता है । यह सिर दर्द, नकसीर एव नेत्र–विकारो–मे भी उपयोगी होता है । गर्भवती स्त्री के लिए अमृत तुल्य होता है । श्वेत-प्रदर मे भी उपयोगी होता है ।

काली मिर्च (Piper Nigrum) यह कफ वातनाशक, दीपन,पाचन मूत्रल, अग्निमाद्य, अजीर्ण, प्रमेह, श्वास-कास व उदर-शूल को दूर करती है ।

नौसादर [Ammoniaum Chloride] यह श्वास सस्थान को उतेजित करके उसमे चिपके हुए श्लेष्मा को पतला करके वाहर निक–लता है ।

गुलकन्द यह पित की तीक्ष्णता को शात करता है । कब्जी को दूर करता है । दाह–प्रशमन, हृदय बलकारक, ज्वरघ्न, अतिसार मे लाभप्रद है ।

अकरकरा (Pyrethum Radix) यह वात-कफ नाशक, पौष्टिक, लालास्त्रावजनक, नाडीबल्य,वेदनास्थापन एव कामोद्दीपक होता है ।

काला नमक (Black Salt) यह भूख को बढाता है जी मचलाना, उबाक आदि मे लाभप्रद है ।

मुन्नका (Vitis Vinifera) यह वात पितशामक, ज्वर नाशक, रक्त प्रसादन, रक्त पितशामक फेफडो को बल देने वाली, श्वास कासहर, क्षय

नाशक, कोष्ठमृदुकर, मूत्रल, एव बाजीकर होती है। इससे प्यास कम लगती है।

नीम्बू (Citrus Medica) : यह पित शामक, तृष्णा निग्रहण, दीपन, पाचन, पितसारक, मूत्रल, ज्वरघ्न, पाडु-कामला नाशक होता है।

चित्रक छाल Plumbago Indica : यह दीपन-पाचन व पेट के दर्द को शात करती है।

पीपल Pepper Long · यह रक्तवर्धक है। अग्निवर्धक है। प्लीहा वृद्धि को रोकती है। श्वास-कास मे उपयोगी है।

अदरक Zingiber Officinale . यह आम वातनाशक, अफारा, कफ, खासी एव पेट दर्द को ठीक करने मे सहायक है।

उपयोग :

यह स्वादिष्ट, रुचिकर, क्षुधावर्धक, पाचक, अग्नि-प्रदीपक, अजीर्ण नाशक, खट्टी–मीट्ठी चटनी है। अरुचि, तृषा और मन्दाग्नि को नष्ट करती है। सगर्भा स्त्रियो के लिए उपयोगी है।

सेवन विधि :

5 से 10 ग्राम तक दिन मे 2–3 बार ऐसे ही चाटे या पानी से सेवन करे अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार।

पॅकिग : 200 एव 400 ग्राम पेक्स मे।

त्रिमूर्ति त्रिडायरो

TRIDAYRO (TABLET)

दस्तों के लिए उपयोगी

घटक :

जायफल, जावित्री, लोवान, ग्राम की गुठली, मुहागा, हीरादोखी गोद ।

गुण-धर्म :

जायफल (Nux Moschata) यह अतिसार-प्रवाहिका, ग्रहणी, ज्वरातिसार नाशक, दीपन व पाचन है ।

जावित्री (Arillus) यह वेदनास्थापन, उद्वेष्टर,वातशामक,कुष्ठघ्न अतिसार-प्रवाहिका आदि मे उपयोगी होती है ।

लोबान (Benzoinum) : उदर शूल को शात करता है । पतले मल को खुश्क बनाता है । कफ को बाहर निकाल मे सहायक है ।

आम की गुठली (Mango putamen) यह बालातिसार, रक्तातिसार कृमिजन्य, अतिसार, प्रवाहिका मे लाभप्रद है । इससे प्रोटीन एव कारबोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा मे प्राप्त होता है ।

उपयोग :

यह औषधि रक्तातिसार, आमतिसार मे अतीव मूल्यवान है । पेट का फुलना, दर्द व उदर-शूल से युक्त अन्य पेट सम्बन्धी व्यतिक्रमों मे प्रभावी है । दुर्गन्ध युक्त हरे पीले दस्तो मे विशेप उपयोगी है ।

सेवन विधि :

वयस्क 2 से 4 गोली दिन मे 3–4 वार एव वालक 1 से 2 गोली दिन मे 3 4 बार जल के साथ अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार ।

पैकिग . 100 टेवलेट पैक्स मे ।

त्रिमूर्ति त्रिलेक्स

TRILAX TABLET

जुलाब की उपयोगी टिकिया

घटक :

त्रिफला, रेवन्द चीनी, सनाय, एलुवा, जमाल गोटा, पीपल ।

गुण धर्म :

त्रिफला (Trifla) : यह त्रिदोपहर, दीपन, दाहप्रशमन, पाचन, सग्राही एवं रेचक होता हैं ।

रेवन्द चीनी (Rheum Emodiwall) : यह दीपन, यकृदुतेजक, पौष्टिक अत्यधिक मात्रा मे रेचन है । रेचन क्रिया क्राइसोफेनिक एसिड एव एमोडिन के कारण होती है । यह अतिसार, आमातिसार मे श्रेष्ठ है ।

सनाय (Cassia Angustifolia) . इसमे एलो-एमोडिन C_{1}। H_{5} O_{2} (OH) CH2 OH नामक रेचक सत्व पाया जाता है । यह कृमिनाशक है । यह कोष्ठ को मृदु बनाती है । तथा पाचन क्रिया को ठीक कर दस्त लाती है । आदती कब्ज के लिए यह बहुत ही उपयुक्त है ।

एलुवा (Prunus Corasus) . यह दोपन, पाचन,यकृदुतेजक तथा अत्यधिक मात्रा मे विरेचन होता है ।

जमाल गोटा (Crotonis Semen) यह तीव्र एव उग्र रेचक एव शोथहर है ।

पीपल (Pepper Long) यह पाचक, अग्निवर्द्धक, पेट–दर्द को शात करने वाली है ।

उपयोग :

कविचत वद्धकोष्ठ के लिए, शारीरिक श्रम करने वाले एव मासा–हारी रोगियो के लिए इसके प्रयोग से आतो का भारीपन दूर होता है और तनाव कम होता है । पेट को साफ करती है ।

सेवन विधि :

1 से 2 गोली रात को सोते समय गर्म जल या गर्म दूध के साथ अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार लेनी चाहिए ।

पैकिग : 100 टेबलेट पेक्स मे ।

त्रिमूर्ति त्रिकफ

TRIKOF (SYRUP)

खांसी का मधुर शर्बत

घटक :

वासापंचाग, बडी इलायची, काली-मिर्च, नागकेसर, सौंठ, पीपल, मुलेठी, छोटी कटेरी, शक्कर।

गुण धर्म

वासापचाग (Adhatoda Vasaca) : यह हृदय का हितकारी, स्वर के लिए उतम तथा खासी श्वास, रक्त-पित, क्षय, कफ-पित विकार, अरुचि, तृष्णा की अर्थ औषधि है।

वासाया विद्यमानायामाशाया जीवितस्यच।
रक्त पिती क्षयी कासी किमर्थ मसीदति ॥

बडी इलायची (Cardamomi Fructus) यह वात-कफ रक्त-पित, वमन, श्वास कास, तृष्णानाशक, बमन आदि मे उपयोगी है।

कालीमिर्च (Piper Nigrum) यह कफ-वातनाशक, दीपन, पाचन मूत्रल, अग्निमाद्य, अजीर्ण, प्रमेह, श्वास-कास व उदर शूल को दूर करती है,

नागकेसर (Mesua Feriea यह कफ पित शामक, दुर्गन्ध नाशक दीपन पाचन, श्वास कास मे उपयोगी है।

सौंठ (Zingiber Officinale) यह अफारा, कफ, उदर शूल एवं खासी की उपयोगी औषधि है।

पीपल (Papper Long) यह रक्तबर्धक एव पाचक है। श्वास-कास मे उपयोगी है।

मुलेठी (Glycyrrhizae Radix) इसमे ग्लिसिरहाइजिन नामक मधुर सत्व तथा शर्करा, प्रोटीन एव स्टार्च पाया जाता है। यह वात-पित शामक कफ को निकालने वाली, कण्डूघ्न रसायन है। सूखी व गिली [कफ युक्त] खासी मे बहुत उपयोगी औषधि है।

छोटी कटेरी Solanum Suiattense . यह प्रतिश्याय, कास-श्वास, स्वरभेद मे लाभप्रद है।

उपयोग :

सामान्य सर्दी, प्राथमिक अवस्था मे कुकुर खांसी, कठ नली, अन्न नली एव गल-ग्रन्थियो की सूजन सम्बन्धी खासी तथा श्वास मार्ग सम्बन्धी अन्य सक्रामक रोगो मे यह उपकारी औषध है ।

सेवन विधि :

1 से 2 चम्मच दिन मे 3–4 बार पानी मिलाकर अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार ।

पैकिग : 100 एव 450 एम एल पेक्स मे ।

त्रिमूर्ति वातनाशक तेल

VATNASHAK OIL

वात रोगों में मालिश के लिए

घटक :

सिगीमौरा, पोस्त, सम्भालु, अरण्ड–पत्र, अर्क-पत्र, असगन्ध, धतूर-पत्र, तिल तेल ।

उपयोग :

वातनाशक तेल की मालिश से सब प्रकार के वात रोग, संधिवात, कटिवात, अर्धागवात, गध्रसी आदि दूर हो जाते है । हड्डी का मुड जाना, साधे मुडना, मोच आने पर इसकी मालिश से लाभ मिलता है, इसके प्रयोग से रक्त वाहिनियो का सकोचन होकर शोथान्तर्गत दाहकारक रक्त का प्रसादन होता है । पक्षाघात के लिए इस तेल की मालिश थोडे से समय मे ही अत्यन्त लाभ पहुचाती है । सधिया खुल जाती है ।

प्रयोग विधि :

दर्द वाले स्थान पर हल्के हाथ से धीरे-धीरे मालिश करनी चाहिए अथवा चिकित्सक की देख-रेख मे प्रयोग करे ।

सावधानी :

यह तेल केवल बाहरी प्रयोग [मालिश] के लिए है । मालिश करने के पश्वात हाथो को अच्छी तरह धो लेना चाहिए ।

पैकिग · 50 एवं 100 एम. एल पेक्स मे ।

त्रिमूर्ति त्रिविटा फोर्ट

TRIVITA FORTE CAPSULE

स्वास्थ्यवर्द्धक कैप्सूल

घटक :

अभ्रक भस्म, लौह भस्म, मुक्ता शुक्ति भस्म, शख भस्म, बग भस्म, दाल चीनी, अश्वगधा, सफेद मुसली, विधारामूल, लवग, शिलाजित शुद्ध, कौच बीज, काली मिर्च, जायफल, जावित्री, समुन्द्र शोष ।

गुण–धर्म :

अभ्रक भस्म (Abrakh Bhasam) यह प्रमेह, क्षय, धातु दौर्बल्य, रक्तपित, अर्श, मूत्रकृच्छ, जीर्ण ज्वर, बल-वुद्धि, स्नायुदौर्बल्य, हृदय रोग, वातव्याधि, कफ, वीर्य स्तम्भन, मधुमेह आदि रोगो मे लाभदायक है। अभ्रक भस्म देह को दृढ करता है, वीर्य को वढाता है तरुणावस्था प्राप्त कराता और सम्भोग करने की शक्ति प्रदान करता है। यह मधुमेह, बहुमूत्र बीसो प्रकार के प्रमेह, शरीर का दुबलापन, कमजोरी आदि को दूर करता है। यह रसायन और बाजीकरण भी है।

लौह भस्म (Loha Bhasam) यह शरीर पुष्टी, कफ रोग, रक्त–पित, बल-वृद्धि, पाडू रोग, प्रमेह, मूत्रकृच्छ, ज्वर, वायु रोग, कामला, हृदय रोग, धातु-दौर्बल्य, उन्माद प्रदर आदि रोगो मे अत्यन्त गुणदायक है।

यह रसायन और बाजीकरण है। लौह भस्म मनुष्य की कमजोरी दूर कर शरीर को हृष्ट–पुष्ट बना देती है। यह रक्ताणु वर्धक और पाडु-रोग नाशक है। यदि शरीर मे शुक्र की कमी अथवा अण्डकोष की निर्बलता के कारण नपुसकता उत्पन्न हो गई हो तो लौह भस्म रामबाण होती है।

मुक्ता शुक्ति भस्म (Mukta Shukti Bhasma) · यह भस्म हृदोग, पितज दाह, रक्त और श्वेत प्रदर, वीर्य की कमजोरी आदि मे लाभप्रद है।

मुक्ता शुक्ति भस्म मधुर और शीतल होती है। इसके सेवन से पित की तीव्रता और अम्लता कम हो जाती है तथा नेत्रो की ज्योति वढती है। विचार शक्ति कम हो जाना स्वभाव चिडचिड़ा हो जाना, निद्रा का अभाव दिमाग मे गर्मी वढ जाना, मे यह वहुत उपयोगी होती है।

शंख भस्म (Sankh Bhasam) : यह भस्म संग्रहणी,यकृत, प्लीहा-वृद्धि, अजीर्ण, मन्दाग्नि, अफारा आदि को नष्ट करती है। इस भस्म मे कैलशियम अधिक मात्रा मे होता है। अत: कैलशियम की कमी से शरीर के अन्दर जितने विकार पैदा होते है उनमे यह बहुत लाभ पहुचाती हैं। यकृत और प्लीहा वृद्धि हो जाने से ये दोनो अपनी क्रिया करने मे असमर्थ हो हो जाते है जिससे अन्नादिक पचने और रस रक्तादि धातु ठीक तरह से बनने मे वाधा पडने लगती है, शरीर दुर्वल हो जाता है। ऐसी अवस्था मे शख भस्म से यकृत और प्लीहा की वृद्धि नष्ट हो जाती है और अपना-कार्य अच्छी प्रकार से करने लगते है।

वग भस्म Bang Bhasma) : यह भस्म, शरीर पुष्ट, प्रमेह, पाडु गुल्म, रक्त पित, बल वृद्धि, अग्निमाद्य, शरीर की दुर्गन्धि, दाहशमन, चर्म विकार, अजीर्ण वातरोग, जलोदर, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, नपुसकता, धातु क्षीणता बहुमूत्र, वीर्यस्राव आदि रोगो मे गुणकारी है।

वग भस्म का प्रभाव शुक्र-स्थान पर विशेष रुप से होता है। अत: यह शुक्र की कमजोर को दूर कर शक्ति प्रदान करता है। जब मनुष्य प्राकृतिक या अप्राकृतिक ढग से शुक्र का अधिक दुरुपयोग करता है तब वातवाहिनी सिरा और मासपेशिया कमजोर होकर शुक्र धारण करने मे असमर्थ हो जाती है जिस कारण अश्लील वातावरण मे आने मात्र से ही शुक्र-स्राव होने लगता है ऐसी दशा मे वग भस्म बहुत उपयोगी होती है।

अधिक स्वप्नदोष या हस्तमैथुन के कारण शरीर मे शुक्र की कमी हो जाती है जिसमे वग भस्म का प्रयोग अति लाभदायक है।

किसी-किसी स्त्री को रजोदर्शन काल मे कमर तथा वस्ति प्रदेश मे दर्द होने लगता है। यह दर्द अन्य दर्दो के समान नही होता फिर भी नसो मे दर्द होने की वजह से पीडा का अनुभव अधिक होता है। इस दर्द के कारण मासिक धर्म खुलकर न होकर, रज स्राव थोडा-थोडा और रुक-रुक कर होने तथा मासिक धर्म के सचित होने पर वग भस्म बहुत फायदा करती है।

दालचीनी (Cinnamo mum) दालचीनी मे 1% तक उत्पत तेल टेनिन, स्युसिलेज, शर्करा, स्टार्च आदि तत्व पाये जाते है यह रुक्ष, लघु एवं तीक्ष्ण होती है यह उष्ण वीर्य युक्त है। यह उतेजक, वेदनास्थापन, दीपन-पाचन, यकृदुतेजक, हृदयोतेजक, मूत्रजनन, बाजीकारक, गर्भाशय सकोचक होती है।

अश्वगंधा (Withania Somnifera) इसमे विथेनियोल $C_{25} H_{35} O_5$ तत्व पाया जाता है इसके साथ साथ सोम्नीफेरिन $C_{12} H_{16} N_2$ एव फाइटास्टेरोल तत्व भी पाये जाते है। यह गुण म लघु और स्निग्ध होता है। यह रसायन एव वाजीकरण है। नाडी बल्य, दीपन पाचन, वात कफ नाशक बल्य होता है। यह काम शक्ति को बढाता है।

सफेद मुसली (Asparagus Adscendens) : इसमे ऐस्पेरेगिन, ऐल्ब्युमिन युक्त पदार्थ लबाब और सेलूलोज आदि तत्व पाए जाते है यह गुण मे गुरु और स्निग्ध होती है। यह नपुसकता और शुक्रमेह मे विशेष उपयोगी होती है। मधुमेह एव इक्षुमेह मे लाभप्रद है।

विधारा मूल (Argyreia Speciosa) ' यह गुण मे लघु और स्निग्ध होता है। शरीर को बल्य देता है। जातीय कमजोरी, नाडी बल्य, दीपन, आमपाचन, शोथहर मे उपयोगी है। रसायन एव वाजीकरण है। शुक्र को बढाने मे लाभदायक है। सभी प्रकार के प्रमेह को दूर करता है। काम शक्ति बढाता है। वृद्धावस्था मे उत्पन्न कमजोरी को दूर करता है।

लवग (Caryphyllum) . इसमे मुख्यत.-यूजिनोल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त टेनिक एसिड एवं राल भी होता है। लवग मे केरियोफाइ-लिन नामक फाइटोस्टेरोल तथा तन्तुमय अ श भी होते है। यह गुण मे लघु तीक्ष्ण एव स्निग्ध होती है। कफपितशामक, दीपन, पाचन, शूल प्रशमन एव श्लेष्मनिस्सारक होती है। यह बाजीकरण होती है। कामशक्ति को बढाने मे सहायक है।

शुद्ध शिलाजित (Shilagit Pure) यह सभी प्रकार के प्रमेह को दूर करता है। मधुमेह एव इक्षुमेह मे उपयोगी है। शरीर को बलवान एव पुष्ट करता है। यह रसायन एव बाजीकरण है। स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, नपुसकता, धातुदौर्बल्य धातु क्षीणता, बहुमूत्र, वीर्य स्राव आदि रोगो मे उपयोगी है। कामेच्छा बढाता है। वीर्य को बनाता है। सम्भोग करने की शक्ति को बढाने मे लाभदायक है।

कौच बीज (Mucuna Prurita, ' यह गुण मे गुरु और स्निग्ध होते है। शरीर की ताकत प्रदान करते है। शुक्र का निर्माण करते है। वाजीकरण होते है।

काली मिर्च (Piper Nigrum) इसमे पाइपरीन नामक रगहीन एव ऐल्केलाइड होता है। इसके अतिरिक्त चविसीन, पाइपेरिडोन एव स्टार्च

भी पाया जाता है। यह गुण मे लघु एव तीक्ष्ण होती है। यह दीपन, पाचन, वातपितशामक होती है। नाडियो को बल प्रदान करती है। उतेजना पैदा करती है। प्रमेह मे उपयोगी है।

जायफल, जावित्री · इनमे मुख्यत यूजिनोल होता है। मायरिस्टिक एसिड, पामिटिक, ग्रोलिईक, लिनोलीक एव लॉरिक एसिड पाए जाते है। यह गुण मे लघु, स्निग्ध एव तीक्ष्ण होते हैं। हृदय दौर्बल्य, नपुसंकता एवं शीघ्रपतन को दूर करने मे वहुत उपयोगी है। यह रसायन एवं बाजीकरण होती है।

समुन्द्र शोष (Solvia Plebeia) : इसमे 18% स्थिर तेल 12% प्रोटीन तत्व 44% गोद तथा तन्तु एव 15% भस्म 2% नाइट्रोजन पाया जाता है। यह वीर्य पुष्टिकर तथा सशमन होते है।

शुक्रमेह, शुक्रतारल्य एव मूत्र की जलन तथा शीघ्रपतन मे बहुत उपयोगी है। वीर्य को बढाता है। नपुसकता को दूर करता।

उपयोग :

साधारण ग्रवस्था मे त्रिविटा फोर्ट के सेवन से विभिन्न पोषक तत्वो की पूर्ति होती है, शरीर की प्रतिरोधक शक्ति बढती है। शरीर के सभी सस्थानो पर इसका प्रभाव होने के कारण ग्रनेक ज्ञात एव ग्रज्ञात रोगो मे लाभप्रद है। इसके सेवन से शरीर निरोग बना रहता है।

त्रिविटा फोर्ट के नियमित सेवन से पाचन शक्ति बढती है। शरीर की सातो धातुऐ परिपुष्ट होती है। नया रस, रक्त एव वीर्य बनता है। स्नायु सशक्त होते है। शरीर पुष्ट बलवान एव कातिवान बनता है। वीर्य शुद्ध, पुष्ट एव गाढा होता है। त्रिविटा फोर्ट पौरुप शक्ति बढाने वाली श्रेष्टतम ग्रौषधि है। यौन कमजोरी (सभी ग्रायु वर्ग के लिए) दूर होती है। ग्रधिक ग्रायु के व्यक्तियो को नवजीवन देने वाला श्रेष्ठ टॉनिक है।

शारीरिक दुर्बलता, रोगो के बाद की दुर्बलता, रक्त की कमी, सर्दी, जुकाम, मौसम के परिवर्तन के समय होने वाले विकार, स्नायविक दुर्बलता, जातिय कमजोरी मे त्रिविटा फोर्ट कैपसूल उपयोगी होता है।

त्रिविटा फोर्ट कैपसूल डाइबिटिज मे शुगर की मात्रा कम करने, न्यून रक्त चाप या साधारण उच्च रक्त चाप को सामान्य करने, रक्त मे कोलेस्टेरोल की मात्रा को कम करने मे भी सहायक है।

स्त्रियो मे श्वेत प्रदर, यौन उदासीनता, कमर दर्द, मासिक के समय होने वाले दर्द आदि में लाभप्रद है।

पुरुषो के समस्त प्रमेह रोगो में शीघ्रपतन, वीर्य का पतलापन, युवको मे गलत आदतो के कारण उत्पन्न रोग, स्त्री-पुरुषो को बुढापे की बीमारियो व कमजोरियो मे लाभकारी है।

सेवन विधि :

किसी भी रोग मे या साधारण अवस्था मे एक कैपसूल प्रात. एव एक कैपसूल रात को सोते समय गर्म दूध से ले। स्तम्भन शक्ति वढाने के लिए 30 दिन तक ब्रह्मचर्य से लेने के पश्चात सम्भोग से एक घन्टा पूर्व एक कैपसूल गर्म दूध से ले।

इसका कोई हानिकारक प्रभाव SIDE EFFECT नही होता है। लगातार कितने भी समय तक इसका सेवन किया जा सकता है।

पैकिग : 60 कैपसूल पेक्स मे।

त्रिमूर्ति वनितामृत

VANITAMRIT

स्त्रियों के स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य के लिए

घटक :

अशोक छाल, नीलोफर, असगध, मुन्नका काली, नागकेसर, मोच-रस, दाल-चीनी, धायफुल, शतावर, चीनी।

गुण-धर्म :

अशोक छाल (Saraca Indica) : यह ज्वर, तृष्णानाशक, व्रण-पूरक, आत्र सकोचन, कृमिनाशक, अजीर्ण नाशक, प्यास, जलन, रक्त-विकार मूल, थकावट, बवासीर आदि मे लाभदायक है। इसके साथ ही अफारा,

उदर-वृद्धि, अत्यधिक रज स्राव गर्भाशय से खून वहना, अस्थि भग और मूत्र कृच्छ की बीमारी में यह उपयोगी औषधि है। रक्त-प्रदर व श्वेत-प्रदर मे लाभप्रद हैं।

नीलोफर (Nelumbium Speciosum) : यह कफ-पित शामक दाह प्रशमन, छर्दि एव तृष्णा-निग्रहण, मूत्र विरेचनीय, ज्वरघ्न एव बल्य है

असगध (Withania Somnifera) · यह वात कफ नाशक, बल्य, रसायन, बाजीकरण नाडीबल्य, दीपन-पाचन होता है। कास–श्वास, क्षय, शोथ नाशक है। इससे दुर्बलता दूर होती है। गर्भ–स्राव, गर्भ धारण न होना, नपुसकता रक्त प्रदर मे यह विशेप उपयोगी होता है।

मुनका काली (Vitis Vinifera) · यह वात पितशामक, ज्वरनाशक रक्त प्रसादन, रक्त पितशामक, फेफड़ो को बल देने वाली, श्वास-कासहर, क्षय नाशक कोष्ठ मृदुकर, मूत्रल एव बाजीकर होती है।

नागकेसर (Mesua Ferrea) यह कफ पित शामक, दुर्गन्ध नाशक दीपन-पाचन, ग्राही, अर्शोघ्न, कृमिघ्न, रक्त स्तम्भक, बल्य, बाजीकरण रक्त प्रदर मे उपयोगी है।

दाल चीनी (Cinnamomum Zelanicum) · यह पाचन सम्बन्धी तकलीफो को दूर कर, मुख शोष, उदर शूल, कृमि को हटाती है यह रक्त के श्वेत कणो की वृद्धि करती है।

धायफुल (Woodfordia Fruticosa) : यह कफ पित शामक, दाह, प्रशमन, रक्त-स्तम्भन, मूत्र विरजनीय, ज्वरघ्न आदि रोगो मे लाभ–प्रद। अतिसार प्रवाहिका नाशक है।

शतावर (Asparagus Recemosus) . यह वात पित शामक, बल्य रसायन, मूत्रल, गर्भ–पोषक, स्तन्य-जनन, मेध्य, नाडी बल्य, हृदय, रक्त शामक है।

उपयोग :

स्त्रियो को होने वाले प्रमुख रोग यथा रक्त प्रदर, पीडितार्तव पाडू गर्भाशय व योनी भ्रंश, डिम्ब कोप प्रदाह, हिस्टीरिया, बन्ध्यापन तथा ज्वर रक्त पित, अर्श, मन्दाग्नि, सूजन अरुचि इत्यादि रोगो को नष्ट करता है।

वनितामृत के सेवन से गर्भाशय बलवान बनता है। गर्भाशय की शिथिलता से उत्पन्न होने वाले अत्यार्तव विकार मे इसका उपयोग उतम होता है गर्भाशय के भीतर के आवरण मे विकृति, बीज-वाहिनियो की विकृति गर्भाशय के मुख पर योनिमार्ग मे या गर्भाशय के भीतर या बाहर व्रण हो जाना आदि कारणो से अत्यार्तव रोग उत्पन्न होता है तब वनितामृत एक रामबाण है।

अनेक स्त्रियो को मासिक धर्म आने पर उदर पीड़ा की एक प्रकार से आदत पड़ जाती है जिसे पीडितार्तव या कष्टर्तव कहते है। यह रोग मुख्यत: बीजवाहिनी और बीजाशय और बीजाशय की विकृति मे कारण होता है। कितनी ही रुग्णाओ को तीव्र रुप से पीडा होती है, कमर मे भयकर दर्द, सिर दर्द, वमन आदि लक्षण होते है। उस समय वनितामृत उतम कार्य करता है।

मद्यपान अजीर्ण गर्भस्राव गर्भपात अति मैथुन कमजोरी मे परिश्रम चिन्ता अधिक उपवास आदि से स्त्रियो का पित दूपित होकर पतला और अम्ल रस प्रधान हो जाता है एव खून को भी वैसा ही बना डालता है। जिस कारण शरीर मे दर्द, कटि शूल, सिर दर्द, कब्ज व बैचेनी आरम्भ हो जाती है। साथ ही योनि द्वार से चिकना, लस्सेदार, सफेदी लिए चावल के धोवन के समान रक्त काला, रुक्ष लाल, झागदार मास के धोवन के समान रक्त गिरने लगता है पाचन शक्ति खराब हो जाती है। नये खून का निर्माण नही हो पाता वनितामृत उपरोक्त उपद्रवो को दूर कर शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए अपूर्व गुणकारी दवा है।

पीड़िताातव मे मद ज्वर होता है। मासिक धर्म बड़े कष्ट से और कम आता हैं, कमर पीठ पार्श्व आदि सभी अंगो मे बहुत दर्द होता है, पेशाब भी बडे कष्ट से उतरता है इस रोग मे सबसे अधिक पीडा पेडू मे होती है। इससे वनितामृत ही मुक्त करवा सकता है।

उपरोक्त रक्त प्रदर की जगह श्वेत प्रदर मे सफेद गाढा और लस्सेदार पानी गिरता है। जो पहले गन्ध रहित होता है परन्तु कुछ समय पश्चात दुर्गन्धयुक्त स्राव होने लगता है। दर्द भी धीरे–धीरे बढने लगता है। वे सभी उपद्रव जो रक्त प्रदर मे भी होते है श्वेत प्रदर मे भी होने लगते है अत. वनितामृत उपयोगी होता है।

डिम्बकोश प्रदाह रोग ऋतुकाल मे पुरुष के साथ सगम करने से होता है। इसमे पीठ व पेट मे दर्द होना, वमन होना, योनि से पीव निकलने लगती है। इसमे भी वनितामृत अत्यन्त उपयोगी है।

गर्भाशय एव योनि का अपने स्थान से हट जाने पर अनेक प्रकार के दर्द शुरु हो जाते है योनि बाहर निकल आती है। इसके साथ ही पेड़ू व कमर मे दर्द, पेशाब करने मे दर्द, श्वेत प्रदर का जारी होना, मासिक धर्म कम हो जाय या बिल्कुल बन्द हो जाने पर वनितामृत का सेवन अमृत तुल्य है।

रक्त की कमी के कारण आलस्य एव निद्रा हरदम आती रहती है किसी भी कार्य मे मन नही लगता, खाना अच्छा नही लगता। यौबन का विकास नही हो पाता तब वनितामृत नया सौन्दर्य प्रदान करता है।

सेवन विधि :

5 से 15 मि लि. तक दिन में 2 बार भोजनोपरात जल के साथ या वनितामृत कैप्सूल 1-1 दोनो समय साथ मे देना चाहिए अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिग . 225 एव 450 एम एल. पेक्स मे।

त्रिमूर्ति वनितामृत कैप्सूल

VANITAMRIT CAPSULE

प्रदर एवं अण्य स्त्री रोगों में आशुफलदायी

घटक :

कुक्कुताण्डत्वक भस्म, वग भस्म, लौह भस्म, मुक्ता शुक्ति भस्म, गोदन्ति भस्म, लोध्र, अशोक, हीरावोल, श्वेत चन्दन, दारु हरिद्रा, नाग–केसर, कमल पुष्प।

गुण धर्म :

कुक्कुताण्डत्वक भस्म : यह रक्त प्रदर-श्वेत प्रदर, बहुमूत्र और सोमरोग मे लाभप्रद है। इसके सेवन से प्रसव के पश्चात कुछ दिनो तक शरीर बलवान, स्वरुपवान एव सुदृढ बनता है। रक्त कणो की वृद्धि होती है। पाचन शक्ति प्रवल बनाती है।

वग भस्म · यह स्त्री बीज डिम्ब (OVA) का निर्बल होना, सूजाक उपदश व प्रदर के वढने से हुई निर्बलता को दूर करती है। गर्भाशय व बीजाधार सुदृढ होते गर्भाशय मे दर्द व इसके दोषो को दूर करती है।

लौह भस्म यह आयुवर्द्धक, बल वीर्य को बढाने वाली, रोगो का नाश करने वाली होती है। इसके योग से रक्त कणो की बढोतरी होती है। पाण्डु रोग मे लाभप्रद है। पाचन शक्ति को ठीक करती है।

आयु प्रदाता बलवीर्य कर्ता रोगापहर्ता मदनस्यकर्ता।

अय. समान न हि किञ्जिदस्ति रसायन श्रेष्ठतम नराणाम।

प्रमेह रोग मे उपयोगी होती है। प्लीहा वृद्धि को रोकती है। प्रदर मे लाभप्रद है।

मुक्ता शुक्ति भस्म . यह रक्त स्त्राव को रोकती है। रक्त प्रदर, अम्ल पित, खासी, क्षय, निर्वलता को दूर करती है।

गोदन्ती भस्म यह सिर दर्द, श्वेत एव रक्त प्रदर, रक्त स्राव, सूखी खासी, व्याकुलता व अनिद्रा आदि रोगो मे उपयोगी औषधि है। नगर्भा स्त्री के लिए मूल्यवान रसायन है।

लोध्र (Symplocos Racemosa) यह रक्त स्तम्भन, व्रण–रोदन, शोथहर, खून को साफ करने वाला, गर्भाशय शोथ एव स्त्रावनाशक है। श्वेत एवं रक्त प्रदर मे विशेप रुप से उपयोगी है।

अशोक (Saraca Indica' : यह ज्वर, तृषानाशक, व्रणपूरक, आत्र सकोचन, कृमिनाशक, अजीर्णनाशक, प्यास, जलन, रक्त विकार, शूल थकावट, ववासीर आदि मे लाभप्रद है। रक्त प्रदर श्वेत प्रदर मे लाभदायक अफारा, उदर-वृद्धि अत्याधिक रज'स्राव मूत्र-कृच्छ की बीमारियो मे उपयोगी है।

हीरा वोल (Myrrha) यह त्रिदोपहर, वेदनास्थापन, शोथहर, दीपन पाचन, रक्त शोधक, मूत्रल, आर्तवजनन, स्वेदजनन रोगो मे उपयोगी है।

दारु हरिद्रा (Berberis Aristata) : इसमे बर्वेरीन $C_{20}H_{19}NO_6$ नामक महत्वपूर्ण सत्व पाया जाता हैं। यह रक्त शोधक, गर्भाशय के शोथ हर स्वाब को रोकने वाला, फिरग, उपदंश, गंडमाला, भगन्दर आदि रोगो की महान औपधि है। रक्ताश घ रक्तप्रदर मे उपयोगी है।

नागकेशर (Mesua Ferrea) : यह कफ पित शामक, दुर्गन्ध नाशक, दीपन-पाचन, ग्राही, अर्शोघ्न, कृमिघ्न, रक्त–स्तम्भक, बल्य, वाजीकरण एव रक्त प्रदर मे उपयोगी होती है।

कमल पुष्प (Nelumbo Nucifera) : यह कफ पित शामक, दाह, प्रशमन, तृष्णा, निग्रहण, मूत्र विरेचनीय, ज्वरघ्न आदि रोगो मे लाभप्रद है।

उपयोग :

स्त्रियो को होने वाले प्रमुख रोग यथा रक्त प्रदर, पीडितार्तव पाडु गर्भाशय व योनी भ्र श, डिम्ब कोष प्रदाह, हिस्टीरिया, बन्ध्यापन तथा ज्वर रक्त पित, अर्श, मन्दाग्नि, सूजन अरुचि इत्यादि रोगो को नष्ट करता है।

अनेक स्त्रियो को मासिक धर्म आने पर उदर पीडा की एक प्रकार से आदत पड जाती है जिसे पीडितार्तव या कष्टर्तव कहते है। यह रोग मुख्यत बीजवाहिनी और बीजाशय और बीजाशय की विकृति मे कारण होना है। कितनी ही रुग्णाओ को तीव्र रुप से पीडा होती है, कमर मे भय-कर दर्द, सिर दर्द,वमन आदि लक्षण होते है। उस समय वनितामृत कैपसूल उतम कार्य करता है।

श्वेत प्रदर मे सफेद गाढा और लस्सेदार पानी गिरता है जो पहले गन्ध रहित होता है परन्तु कुछ समय पश्चात दुर्गन्धयुक्त स्राव होने लगता है। दर्द भी धोरे-धीरे बडने लगता है। वे सभी उपद्रव जो रक्त प्रदर मे भी होते है श्वेत प्रदर मे भी होने लगते है अत वनितामृत कैपसूल उपयोगी होता है।

गर्भाशय एव योनि का अपने स्थान से हट जाने पर अनेक प्रकार के दर्द शुरु हो जाते है योनि बाहर निकल आती है। इसके साथ ही पेडू व कमर मे दर्द, पेशाब करने मे दर्द, श्वेत प्रदर का जारी होना, मासिक धर्म कम हो जाय या बिल्कुल बद हो जाने पर वनितामृतकैपसूल का सेवन अमृत तुल्य है।

रक्त की कमी के कारण आलस्य एव निद्रा हरदम आती रहती है किसी भी कार्य मे मन नही लगता, खाना अच्छा नही लगता। यौबन का विकास नही हो पाता तब वनितामृत कैपसूलनया सौन्दर्य प्रदान करता है।

सेवन विधि :

1 से 2 कैपसूल दिन में 4 बार जल, दूध या फलो के रस के साथ अथवा भोजनोपरात 1 से 2 कैपसूल वनितामृत लिक्विड के साथ अथवा चिकित्सक की सलाहनुसार।

पैकिग 100 कैपसूल पेक्स मे।